Chap-6

: अध्याय -- छः :

: वेश्या-समाज : परिवेश एवं भाषा :

:

: अध्याय — छः :

:: वेश्या - समाज : परिवेश एवं भाषा ::

6

प्रास्ताविक :

वेश्यावृत्ति अति प्राचीन काल से प्रचलित रही है । यह सर्वकालिक और सर्वदेशीय है । प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक उसका विस्तार है, इस दृष्टि से यह सर्वकालिक है ; तो संसार के सभी देशों में उसका चलन है, इस दृष्टि से उसे सर्वदेशिय कह सकते हैं । लुइज ब्राउन की पुस्तक " यौन दासियाँ : एशिया का सेक्स बाजार " में प्रायः एशिया के सभी देशों की चर्चा है जिसमें वेश्या-वृत्ति का प्रचलन है । अतः वेश्याओं का समाज भी सर्वकालिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप का हो सकता है । किन्तु हम जब "वेश्या-समाज" की बात करते हैं, तो हमारा यह समाज केवल उन हिन्दी उपन्यासों तक महदूद है, जिनमें इस प्रवृत्ति का आलेखन किसी-न-किसी रूप में

हुआ है । मतलब कि वेश्या-समाज का हमारा निरूपण हिन्दी उपन्यासों पर आधारित है । वेश्याओं की विभिन्न कोटियों पर विचार करते हुए मुख्यतः उनको हमने दो वर्गों में विभक्त किया था — प्रकट-समूह और अप्रकट-समूह । अतः इस अध्याय में हमारे चर्चा वेश्याओं के प्रकट समूह को लेकर होगी , क्योंकि अप्रकट वेश्र वेश्याएं सभी प्रकार के समाजों का अंग हैं । वे किसी एक स्थान पर रहती नहीं है । यद्यपि अनेक उपन्यासों में हमें वेश्यावृत्ति का चित्रण उपलब्ध होता है , किन्तु जहां तक परिवेश एवं भाषा का सम्बन्ध है , हिन्दी के कुछेक उपन्यासों में वह खुलकर और अपने उधड़े हुए रूप में आया है । ऐसे उपन्यासों में "मुरदाघर" ‖ जगदम्बाप्रसाद दीक्षित ‖ , "नदी फिर बह चली " ‖ हिमांशु श्रीवास्तव ‖ , "बोरीवली से बोरीबन्दर तक " तथा "कबूतरखाना " ‖ शैलेश मटियानी " और "आखिरी सलाम" ‖मधु कांकरिया ‖ आदि उल्लेखनीय हैं । प्रस्तुत अध्याय में हमने प्रायः इन उपन्यासों का ही आधार लिया है । "आखिरी सलाम " की चर्चा करते हुए चतुर्थ अध्याय में हमने प्रस्तुत उपन्यास को "वेश्या-जीवन का महाकाव्य"कहा है । इसका अर्थ यह कतई नहीं कि यह उपन्यास बृहदकाय उपन्यासों की कोटि में आता है । उसकी पृष्ठ-संख्या 192 है , किन्तु इतने लघु कलेवर में भी उसमें वेश्या-जीवन के लगभग तमाम-तमाम आयाम और पक्ष आ जाते हैं । "मुरदाघर" में मुंबई के माहिम इलाके की एक झोंपडपट्टी का चित्रण है , अतः झोंपड़पट्टी में रहने वाले लोगों का जीवन उसमें समाकलित है , परन्तु यहां भी झोंपड़पट्टियों की वेश्याएं ही केन्द्र में हैं । अतः उसे वेश्या-जीवन पर लिखा गया उपन्यास कह सकते हैं ‖ यही बात हम शेष उपन्यासों के संदर्भ में भी कह सकते हैं । "कबूतरखाना" में वैसे तो भुवेश्वर की सेठानियों का चित्रण है । किन्तु उनकी वेश्या-वृत्ति अप्रकट प्रकार की रहेगी । परन्तु प्रस्तुत उपन्यास के सेठों का संसार मुंबई की वेश्याओं तक पहुंचता है , इस संदर्भ में मुंबई के कुछेक लालबत्ती विस्तारों की चर्चा उसमें हुई है । प्रस्तुत अध्याय

को अध्ययन की सुविधा हेतु हमने तीन भागों में विभक्त किया है ---
§क§ वेश्या-समाज , §ख§ वेश्या-परिवेश और §ग§ वेश्याओं द्वारा
प्रयुक्त भाषा ।

§क§ वेश्या-समाज :

"वेश्यावृत्ति विश्व का सबसे पुराना व्यवसाय है और तभी से चला आ रहा है जबसे कि समाज के लोगों की काम-भावनाओं को विवाह और परिवार में सीमित किया गया है । भारत में ही नहीं वरन् यूनान व जापान में भी "हीटरी" और "गीशास " के रूप में वेश्यावृत्ति का प्रचलन रहा है ।"[1] । पश्चिम में इस समस्या पर इलियट तथा मैरिल § ध्यान रहे ये इलियट समाजशास्त्री हैं , अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि व विवेचक इलियट नहीं § , जियाफ्रे , बोंगर , क्लीनार्ड , हेवलोक एलिस आदि ने विचार ~~किया~~× किया है ।[2] हमारे यहां वात्स्यायन , कौटिल्य आदि ने अपने ग्रंथ क्रमशः "कामसूत्र" तथा "अर्थशास्त्र" में इसका विस्तृत व शास्त्रीय विवेचन किया है । इसका अर्थ यह हुआ कि यह परंपरा प्राचीन काल से और लगभग सभी देशों में प्रचलित है । भारतीय पुराणों एवं धर्म-ग्रन्थों में मेनका , रम्भा , उर्वशी आदि अप्सराओं का उल्लेख मिलता है , जो बहुत ही सुन्दर हुआ करती थीं , आज की शब्दावली का ~~प्रयोग~~× प्रयोग करें तो ब्रह्मांड-सुंदरी§ मिस यूनिवर्स § , और नृत्य तथा गायन में दक्ष होती थीं । वे इन्द्र के दरबार में इन्द्र तथा अन्य देवताओं का मनोरंजन करती थीं और कई बार उनको ऋषियों की परीक्षा लेने या उनका तप भंग करने केलिए भेजा जाता था । रामायण और महाभारत काल में वेश्याओं का उल्लेख मिलता है । डा. नरेन्द्र कोहली ने रामायण और महाभारत पर जो उपन्यासमाला लिखी है , उसमें अनेक उपन्यासों में वेश्या-समाज का या वेश्याओं के अस्तित्व का जिक्र हुआ है । उत्तर-वैदिक काल में वेश्यावृत्ति एक संस्थात्मक रूप ले चुकी थी । राजाओं और सम्पन्न लोगों के यहां विवाह , त्यौहार एवं उत्सवों के समय

वेश्याएं नृत्य एवं गायन द्वारा लोगों का मनोरंजन करती थीं । कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज-दरबारों में नाचगान करने वाली "गणिकाओं" का उल्लेख मिलता है, जो 64 कलाओं में दक्ष हुआ करती थीं और जिनका इन राज-दरबारों में बड़ा मान-सम्मान हुआ करता था । प्रेमचंद के "सेवासदन" उपन्यास में गौनहारिन वेश्याओं का वर्णन मिलता है । भोली गौनहारिन वेश्या है और बाद में सुमन भी गौनहारिन वेश्या ही होती है । उपन्यास में हम देखते हैं कि भोली का बनारस के सभ्य और धार्मिक समुदाय में काफ़ी मान-सम्मान है । सभ्य-संपन्न वर्ग और धार्मिक सम्प्रदायों से जुड़े हुए लोग, यों उभय वर्ग के लोग भोली को मान-सम्मान देते हैं और अप्रकट रूप में उसके पैरों पर लोटते भी हैं, यही सब देखकर तो सुमन का वेश्या के रूप में पतन हुआ है ।[3]

मौर्यकाल तथा गुप्तकाल में हमें ऐसी गणिकाओं या नृत्यांगनाओं का उल्लेख मिलता है, जैसे चित्रलेखा, आम्रपाली, मदनिका, केशा आदि । जातक कथाओं में भी ऐसी सुन्दरियों की उल्लेख मिलता है जो एक रात्रि के लिए एक हजार सोनामोहर मांगती थीं ।[4] वात्स्यायन कामसूत्र में नौ प्रकार की वेश्याओं के भेद बताये हैं — कुम्भदासी, परिचारिका, कुलटा, स्वैरिणी, नटी, शिल्पकारिका, प्रकाशविनष्टा, xxxxxxxxxxxx रूपाजीवा और गणिका ।[5] किन्तु इन नौ भेदों को मोटे तौर पर हम तीन प्रकारों में रख सकते हैं — /1/ गणिकाएं - जो 64 कलाओं में दक्ष हुआ करती थीं और जिनका प्रवेश राजाओं के अन्तःपुरों में भी होता था और कई बार जिनको राजकुमार या राजकुमारियों की शिक्षा के लिए भी नियुक्त किया जाता था । /2/ रूपाजीवा — जो अत्यधिक सुंदर होने के कारण देखने वालों में यौनेच्छा पैदा कर देती थीं और जिनका मूल्य काफी ऊंचा होता था, अतः सामान्य लोगों की पहुंच के बाहर वह हुआ करती थी । /3/ देहाजीवा — जो अपने रूप-यौवन व देह को बेचने के लिए सदैव तत्पर रहती है और जिनके पास मध्यवर्ग या निम्नवर्ग § आर्थिक दृष्टया § के लोग जाते हैं ।

मुगलकाल में वेश्यावृत्ति चरम-सीमा को स्पर्श करने लगी । बादशाह और नवाब अपने हरम में हजारों स्त्रियों को रखते थे । औरंगजेब इसमें अपवाद है । मुगल साम्राज्य के पतन के बाद इनमें कमी आयी । बेरिया , नट , ब्रजवासी , पतारिया , राजधारी, डेरेदार आदि जनजातियों की अनेक वेश्याएं आज भी स्वयं को मुगल दरबार की पत्नियों की संतानें बताते हैं । [6] ब्रिटीशकाल में नगरीकरण {अर्बनाईजेशन} और औद्योगीकरण {इण्डस्ट्रियालाईजेशन} के कारण इस समस्या ने एक नया रूप अख्त्यार किया । गवर्नर जनरल , वाईसरोय , उनके मातहत बड़े-बड़े अफसर ऊँचे प्रकार की वेश्याओं को अपने बंगलों पर बुलाते थे या उनके कोठों पर नाच-गाना सुनने जाते थे । उनको हम रायल प्रकार की वेश्याएं कह सकते हैं । उनकी देखादेखी अनेक तालुकेदार , जमींदार , नवाब , छोटे-मोटे राजा-महाराजा अपनी व्यक्तिगत वेश्याओं को रखते थे , जिनको हम उनकी "रखैल" भी कह सकते हैं । पूर्ववर्ती पृष्ठों में हम शिवानी दारा प्रणीत "कृष्णकली " का जिक्र कर चुके हैं , जिसमें "पीली कोठी" की मुनीर नामक रायल नृत्यांगना का उल्लेख मिलता है । मुनीर नेपाल के राणा की रखैल थी , पर कभी-कभी उसके कोठे पर अंग्रेज आफिसर तथा उनके नौकर-चाकर भी आ जाया करते थे । मुनीर की तीनों बेटियों — माणिक , पन्ना और हीरा — के पिता अलग-अलग हैं । माणिक राणा की बेटी है । पन्ना लाट-साहब के ए.डी.सी. राबर्टसन की पुत्री है मो हीरा लाट साहब के दामाद के हब्शी नौकर रौबी की पुत्री है । मुनीर और हीरा की मृत्यु एक कार-एक्सिडेण्ट में हो जाती है । उसके बाद मुनीर के व्यवसाय को माणिक संभालती है । [7]

आजादी के बाद जमींदारी-प्रथा का उन्मूलन हो गया । फलतः अनेक वेश्याएं बेसहारा हो गईं । वेश्यावृत्ति की रोकथाम के लिए कई कानून बनाए गए हैं , जिनके नाकारेपन पर हम परवर्ती पृष्ठों में प्रकाश डाल चुके हैं । जितने कानून बनाए जाते हैं वेश्यावृत्ति उतनी

बढ़ती ही जाती है, बल्कि उसका रूप और भी गन्दा, घिनौना और विकृत होता जा रहा है। पहले निश्चित विस्तारों और इलाकों में यह व्यवसाय चलता था, अब वह चारों तरफ फैल गया है। बड़े-बड़े शहरों में होटलों, क्लबों, नाचघरों, कैबरे के नाम पर वेश्यावृत्ति चल रही है। कुछ लड़कियाँ कालगर्ल्स, कैरियर-गर्ल्स, मोडैल्स, के रूप में हाई-फाई प्रकार की वेश्यावृत्ति चला रही हैं। फिल्मों में काम पाने के लिए लड़कियों को "कास्टिंग-काउच" का शिकार होना पड़ता है। "फागुन के दिन चार" (उग्र), "दिल एक सादा कागज़" (रज़ा), "छाया मत छूना मन" (हिमांशु जोशी), "हिज हाईनेस" (अभयचरण जैन) आदि उपन्यासों में हमें इस प्रकार की वेश्यावृत्ति का चित्रण मिलता है। कई बार कई फिल्म अभिनेत्रियों को अपने "स्टाण्डर्ड" के हिसाब से रहना पड़ता है, पोश एरिया में लक्ज़ुरीयस फ्लेट्स बैंxxबैंxx वगैरह लेना पड़ता है, जिसके लिए उन्हें "एकस्ट्रा-मनी" की आवश्यकता पड़ती है और फलतः वे पैसे कमाने के "xxxx" शार्ट-कट" रास्तों को तलाशती है। दिनांक 29-7- 02 के "टाइम्स आफ इण्डिया" के निम्नलिखित समाचार को ध्यान से देखिए : " टु मुंबई स्टारलेट्स एण्ड ए मोडेल, टु डबल्ड अप एज कालगर्ल्स टु मेक सम एकस्ट्रा मनी एण्ड सोलिसिटेड क्लायण्ट्स थ्रु वेबसाइट, वेर अरेस्टेड बाय द नागपुर रुरल पोलिस ... द गर्ल्स वेर पिक्ड अप फ्रोम ए गेस्ट हाउस इन हिंग्ना इन द वेस्टर्न पार्ट आफ द सिटी आफ्टर ए ट्रेप वाज लेइड टु कैच थेम. ... द गर्ल्स वेर एकोर्डिंगली रीसिव्ड एट द एयरपोर्ट एण्ड टेकन टु ए फार्महाउस इन हिंग्ना व्हेर थे वेर पेइड रूपिज़ 75,000 इच, आफ्टर द गर्ल्स एसेप्टेड द पेमेण्ट, ए पोलिस टीम एराइव्ड एट द सीन एण्ड अरेस्ट थेम. " 8 अब तो कई बार सम्मानित परिवारों की सुंदर महिलाएं भी इस व्यवसाय में पायी जाती हैं। "नदी फिर बह चली" में एक बड़े अफसर की बीबी को इस व्यवसाय में पाया गया था। वस्तुस्थिति का

भांडा तब फूटा जब उस भद्र महिला को उसके पति के सामने ही पेश किया गया । [9] मतलब कि इन वेश्याओं का संसार-समाज यत्र-तत्र-सर्वत्र छाया हुआ है । कुछ रूपयों में देह का सौदा करनेवाली "मुरदाघर" , " सलाम आखिरी" की वेश्याओं से लेकर एक-एक रात के लाख-दोलाख लेने वाली हाई-फाई वेश्याएं भी इनमें शामिल है । मोटे तौर पर इनके समाज को हम तीन स्तरों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ हाई-फाई सोसायटी की हाई-फाई वेश्याएं जिनके एक नाइट के चार्ज पचास हजार से लेकर लाख-दो लाख होते हैं , /2/ मध्यवर्ग के लिए मध्यस्तरीय वेश्याएं जिनके चार्ज सौ- दो-सौ रूपयों से लेकर एक-दो हजार तक के रहते हैं । और /3/ एकदम निम्नवर्गीय वेश्याएं जो रोज धंधा करती है और रोज खाती हैं । एक दिन ग्राहक न मिले तो जिनको खाने तक के फांफे पड़ जाए ।

हाई-फाई सोसायटी की वेश्याओं का समाज भी हाई-फाई होता है । उसमें ऊंची सोसायटी की महिलाएं होती हैं । कालेज और युनिवर्सिटी की छात्राएं होती हैं , मोडेल्स और बी" और "सी"ग्रेड की फिल्म अभिनेत्रियां होती हैं । कैरियर-विमेन होती हैं । "मछली मरी हुई" की कल्याणी , "छाया मत छूना मन" की कंचन , "डाक बंगला" ‖ कमलेश्वर ‖ की इरा , "रेखा" की रेखा , "हिज हाईनेस" की वह फिल्म अभिनेत्री , "चम्पाकली" की चम्पाकली ,;" कुन्जकली" की मुनीर , माणिक , पन्ना ; "दिल एक सादा कागज़ " में वर्णित फिल्म अभिनेत्रियां , "पतझर की आवाजें " की उषा , "चिड़ियाघर " की मिसेज रिजवी , " वे दिन" की रायना , "मुक्तिबोध" की नीलिमा , "दशार्क" की रंजना आदि वेश्याएं ‖ यदि इनको वेश्या माना जाए ‖ इस हाई-फाई वर्ग में आती हैं ।

मध्यस्तरीय वेश्या-समाज में "सलाम आखिरी" में वर्णित मीना , नलिनी , नूरी , रमा , गायत्री , माया देव-नार , पिन्की , रेशमी , श्रावणी आदि वेश्याएं आती हैं । इनमें

भी हैसियत के हिसाब से वर्गभेद मिलता है, जैसे कोठेवालियां, कमरे-वालियां, लाइनवालियां आदि-आदि । कोठेवालियां उनको कहते हैं जिनका अपना कोठा या चकला होता है । जगह के हिसाब से ये वेश्याओं को अधिया-सिस्टम पर रखती हैं, अर्थात् उनकी कमाई का पचास प्रतिशत उनको मिलता है । बदले में वे उनको रहने की सुविधा देती है, उनके लिए ग्राहकों की व्यवस्था करती है । उनके खाने-पीने की व्यवस्था करती है । परन्तु ऊपरी खर्चे की रकम उनसे ले लेती है, अर्थात् साबुन, पावडर, सौन्दर्य-प्रसाधन आदि का खर्चा । "सलाम आखिरी" में मीना मैडम, माया देवनार आदि कोठेवालियों का चित्रण हुआ है । उनमें कुछ तो बहुत ही सख्त मिजाज होती हैं, पर मीना मैडम जैसी कुछेक रहमदिल भी होती हैं । इन कोठेवालियों की उम्र पैंतालीस-पचास के आसपास की होती हैं । वृद्धा भी हो सकती हैं । ज्यादातर वेश्याओं में से ही कोठेवालियों का निर्माण होता हैं । प्रत्येक वेश्या का एक सपना होता है कि उसका अपना कोई कोठा हो । इनका बड़ा रुआब होता है । छोटा-सा ही सही पर उनका अपना एक तख्तो-ताउस होता है । वहां की वे "महारानी" होती हैं । इनको वेश्याओं की भाषा में कई बार "मौसी" भी कहा जाता है । इनका बड़ा रसूख होता है । पुलिस और सरकार में भी उनकी कई बार पहुंच होती है । "आगामी अतीत" में डा. कमल बोस अपनी बेटी चांदनी की खोज में कार्सियांग जाता है । वहां जिस वेश्यालय में उसे चांदनी मिलती है, उसकी माल-किन को सब वेश्याएं "मौसी" ही कहती हैं । वह भी एक रहम-दिल औरत है । पर कुछ मौसियां तो बड़ी सख्त और और जालिम-दिल होती हैं । कानून के बावजूद वे ज्यादातर "छिकुरियाओं" (बाल-वेश्याओं) को रखती हैं, क्योंकि वे ज्यादा कमाई करवाती हैं । ग्राहक भी "बाल-वेश्याओं" को ज्यादा पसंद करते हैं । कालीघाट की माया देवनार ऐसी ही एक सख्त-दिल कोठेवाली है । वह ज्यादातर अपने कोठे पर "छिकुरियाओं" को रखती हैं ।

तेरह-चौदह साल की नाबालिग लड़कियों की योनियों में कागज़ के शोले रखकर वह उनको घण्टों ठण्डे पानी के टब में बिठाती है, इससे "छिकुरिया" की योनि का विकास होता है और वह दो-तीन महीनों में कमाने लगती है।"[10] माया कोठेवाली तो है, पर साथ-साथ खुद भी धंधा करती है। वस्तुतः वह निम्फो हो चुकी है। दूसरी वेश्याएं इसे एक बदचलन वेश्या मानती हैं। कैसा भी ग्राहक हो, किसी भी उम्र का, उसे असुविधा नहीं होती। वह समभाव से सबके साथ, यहां तक कि छोटे स्कूल-कालेज के लड़कों तक से मजे में खुशि-खुशी निपट लेती थी। वेश्या कमली एक स्थान पर उसके बारे में बताती है: "ऊ तो पूरी कुतिया है, मर्द खाऊ, फटा ढोल। जो भी, जैसा भी आ जाए बिछ जाती है। आदतें खराब हो चुकी हैं उसकी। ई सबके बिना चलता नहीं, नित्य नया चुग्गा चाहिए उसको। संसार के सारे मर्द भी कम पड़ें उसके लिए।"[11] इसी उपन्यास में एक सख्त कोठेवाली का जिक्र आता है। एक बार कोई ग्राहक कोठे से "छोकरी" को ले गया। वह उसको जी-जान से चाहता था और उसके साथ विवाह करके घर बसाना चाहता था। पर दूसरे ही दिन उसकी मालकिन दलाल के साथ पहुंच गई और कहा कि लौटा दे मेरी छोकरी, नहीं तो तेरी बहन को भरपाई करनी होगी। वेश्या हूं और कइयों को वेश्या बना चुकी हूं।[12] इस धमकी के सुनते ही वेश्या के उस प्रेमी की हवा निकल गई और वह उसे वापस कोठे पर छोड़ आया। बाद में कोठेवाली मौसी ने उस वेश्या का क्या हाल बनाया होगा, उसकी तो कल्पना तक नहीं कर सकते।

"कमरेवालियां" उनको कहते हैं जिनके पास छोटा-सा ही सही पर अपनी मालकी का कमरा होता है। ऐसी वेश्याएं प्रायः वे होती हैं जिनकी मां भी इस पेशे में रह चुकी हो। अतः वेश्यावृत्ति उनको विरासत में मिली होने के कारण उनकी स्थिति दूसरी वेश्याओं से कुछ बेहतर होती है। "सलाम आखिरी" की पिन्की इस प्रकार की

वेश्या है । लाइनवालियां उन वेश्याओं को कहते हैं जिनको लालबत्ती विस्तारों में या झोंपड़पट्टियों या समुद्र-किनारों पर ग्राहकों के लिए भटकना पड़ता है । कोठेवालियों और कमरेवालियों के लिए ग्राहक ले आने की मेहनत उनके दलाल उठाते हैं । इन तीन प्रकार की वेश्याओं के अतिरिक्त कुछ वेश्याएं होती हैं जिनको "फ्लाइंग वेश्या" कहा जाता है । ये वेश्याएं नगरों या महानगरों के आसपास के गांवों से आती हैं और शाम को अपने-अपने× अपने गांवों को चली जाती हैं, इसलिए उनको "फ्लाइंग वेश्या" कहते हैं । [13] कोठेवालियों और कमरेवालियों से इनकी सांठगांठ होती है और वे उनकी जगहों का अपने ग्राहकों को निबटाने में इस्तेमाल करती हैं जिसका भाड़ा या कमीशन वे बाकायदा कोठेवालियों या कमरेवालियों को देती हैं । "सलाम आखिरी" की गायत्री इस प्रकार की वेश्या है । ये लोग गांवों में अपने घर-परिवार वालों तथा समाज को बताती हैं कि वे किसी कारखाने, दुकान× या दुकान पर काम करती हैं या कि बड़े घरों में खाना बनाने का काम करती हैं या बच्चों को संभालने का काम करती हैं।

इन वेश्याओं के अलावा वेश्या-समाज में हम उन सभी को शामिल करते हैं, जो इस व्यवसाय के हाथ-पैर हैं । ज्ञानचंद्र जैन के उपन्यास "जनानी सवारियां" में इन "हाथ-पैरों" का बाकायदा वर्णन किया है । प्रस्तुत उपन्यास का रामजीदास एक बुर्दाफरोश है । लेखक ने रामजीदास के सहायकों के संदर्भ में लिखा है : "यही उनके हाथ-पैर हैं, इन्हीं की मदद से उनके रोजगार की बेल फलती है, इन्हीं के बल पर इन्हें घर बैठे "माल" हासिल होते हैं । यही उनके हाली-मवाली हैं और ये ही उनके अनुचर हैं, ये ही उनके यार हैं और ये ही मददगार । इन्हीं के जरिये उनकी पहुंच उन तहखानों तक हो जाती है, जहां सूरज की किरण भी जाते हुए डरती है । इन्हीं के सहारे ये लोग उन बातों को जान लेते हैं, जिन्हें सिर्फ ईश्वर ही जानता है । ये ही इनके हाथ-पैर हैं ।" [14]

इन हाथ-पैरों में कोई आश्रम का संचालक होता है, तो कोई मंदिर का पुजारी, तो कोई साधु बाबा, तो कोई जमाना खाई हुई तजुर्बेकार बुढ़िया। इन्हीं लोगों की पहुंच समाज की, गांव-खेड़ों की दुःखी बहू-बेटियों तक होती है। वे ऐसी स्त्रियों- लड़कियों की दुःखती रग को पहचानते हैं और सही मौके पर उन पर हाथ रख देते हैं। "सलाम आखिरी" में नलिनी को बहूबाजार तक ले आने का काम एक ऐसा व्यक्ति करता है जो प्रेम का ढोंग रचाकर, उसे गांव से यहां तक ले आता है।[15] इसी उपन्यास की बांगला-देश की लड़कियां अफसाना और आरशा को उनकी दूर के रिश्ते की खाला उन्हें कलकत्ता दिखाने के लिए ले आती हैं और उन्हें ईला नामक चकलेवाली के यहां बेच देती हैं। वह तो भला हो चन्द्रिका और इन्द्राणी दी का कि उनको इनके चंगुल से छुड़वाया जाता है।[16] "बोरीवली से बोरीबन्दर तक" की नूर (मूल नाम रेवा) तथा "मुरदाघर" की मैना प्रेम-वंचना की शिकार हैं। ऋषभचरण जैन के उपन्यास "जनानी सवारियाँ" में एक महिला आश्रम के संचालक का जिक्र आता है, जो आश्रम की भोली-भाली लड़कियों को रामजी-दास जैसे बुर्दाफरोशों को बेच देता है। लड़की को यह लालच दिया जाता है कि किसी अच्छे घराने में उसका पुनर्विवाह करवा दिया जायगा। आश्रम का यही संचालक एक स्थान पर रामजीदास को कहता है: "अनार उसका नाम है। और यहां से पांच सौ कोश दूर के एक कसबे की वह बेटी है। शादी उसकी आठ वर्ष की उम्र में हुई थी; लेकिन पतिदेवता बचपन में ही कहीं चल दिये। पांच- छः बरस छाती पर पत्थर रखकर उसने रण्डापा काटा, लेकिन एक दिन एक दूत की नज़र पड़ गई और उसे पुनर्विवाह करवाने की लालच से उतार लिया गया।"[17] इसी उपन्यास में एक अध्याय का नाम है — "ठिकाने"। उसमें रामजीदास जैसे लोगों को लड़कियां सप्लाय करने वाले जो "ठिकानें" हैं उनमें मंदिर, मठों, आश्रमों और उनसे सम्बद्ध साधु-सन्यासियों का योगदान भी कम नहीं

है । प्रस्तुत उपन्यास में वेश्या-व्यवसाय से जुड़ी इस द्वितीय चैनल का पूरा विवरण दिया गया है । इसे भी वेश्या-समाज का एक अंग ही कहना चाहिए ।

इनके अतिरिक्त लालबत्ती विस्तारों में या अन्यत्र ग्राहकों को वेश्याओं तक पहुंचाने वाले जो दलाल या भड़वे होते हैं , वे भी इस माज का एक महत्वपूर्ण अंग है । लालबत्ती विस्तारों के अतिरिक्त ये सभी जगहों पर फैले हुए होते हैं । कई शहरों में ओटावाले , टेक्सी-वाले , रिक्शावाले भी इस व्यवसाय में जुड़े हुए होते हैं । तीन सितारा या पंचतारक होटलों में भी इनका जाल बिछा हुआ मिलता है । "सलाम आखिरी" में बताया गया है : " हावड़ा के ब्यूटी-पार्लरों , होटलों , लोज सब जगह धड़ल्ले से चल रहा है यह धन्धा । हावड़ा के पास किसी भी होटल में ठहर जाइए , यदि कोई फेमिली नहीं है आप के साथ तो शाम ढलते ही कोई-न- कोई दलाल आपके रूम में आकर पूछ जाएगा , "लगेगी ? " अभी आठ मार्च को पुलिस ने छापा मारा था , साले मालिक , मैनेजर और कर्मचारी सब मिले हुए । हमाम में सभी नंगे । " 18

सोनागाछी की वेश्याओं का जिक्र हो और उसमें "बाबू" न आवे तो उसे अधूरा ही समझना चाहिए । ये "बाबू" भी वेश्या-समाज का ही एक अंग है । सोनागाछी की प्रायः सभी फुल-टाइम वेश्याएं जो "छुकरी" और "अधिया-सिस्टम " से होती हुई स्वतंत्र वेश्यावृत्ति में लगी हुई हैं , या जिन्होंने इन्हीं गलियों में आँखें खोली हैं , अपने-अपने भाड़े के इकलौते कमरे में अपने प्रेमी के साथ रहती हैं , जो सामाजिक विधान के अनुसार इनके पति तो नहीं है , लेकिन फिर भी ये वेश्याएं इनको पत्नी की-सी निष्ठा एवं समर्पण के साथ "बाबू" कहकर बुलाती हैं , ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मध्ययुग में यूरोपियन औरतें अपने पति को "माई लोर्ड , माई लोर्ड" कहकर बुलाती थीं । बिना विवाह भी ये वेश्याएं

इनके नाम के सिन्दूर से अपनी मांग भरती हैं । कई वेश्याएं रास्ते में खड़ी रहते वक्त सिन्दूर नहीं डालतीं, पर जिन दिनों या घण्टों में इस कर्म से मुक्त रहती है, घर में सिन्दूर और शाखा पोला (बंगाली सुहाग चिह्न) के साथ गृहिणी की मर्यादा के अनुसार रहती हैं । ये बाबू प्रायः वेश्या के ग्राहकों में ही धीरे-धीरे धीरे विशिष्ट होते-होते इनसे भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं और इसके साथ ही बहुत ही शीघ्र वे वेश्या के बच्चों के गौरवशाली (१९) पिता भी बन जाते हैं । पिता-पद स्वीकार करते ही वेश्याएं इन्हें खुशी-खुशी पति के अधिकार भी सौंप देती हैं । जीवन के दोनों ही रूप साथ-साथ चलते रहते हैं, वेश्यावृत्ति भी और गृहस्थी भी । ये बाबू प्रायः कलकत्ते से बाहर के आए हुए दूसरे गांव के बाशिन्दे बाशिन्दे होते हैं । टैक्सी ड्राइवर, बस ड्राइवर, रिक्शा चालक, बिजली मिस्त्री, राज मिस्त्री, दीवारों पर पोस्टर लगाने वाले आदि । यहां वेश्या के पास इन्हें शहर में रहने का ठौर, देह को दूसरी देह और पत्नी की-सी देखभाल भी मिल जाती है । इसके एवज में घर-खर्च में भी इनका भरपूर योगदान रहता है । कई बार जब वेश्या का धन्धा मन्दा चलता है, या वह बीमार पड़ जाती है या उसके गर्भ-काल का समय रहता है, तो ऐसे में ये बाबू अकेले ही अपने घर की गाड़ी खींचते हैं । इस×प्रकार इस प्रकार यदि हम कहना चाहें तो इनको "रखैला" कह सकते हैं । 19

" साथ-साथ रहते दोनों में धीरे-धीरे पति-पत्नी के-से भाव भी जाग जाते हैं और रफ्ता-रफ्ता यहां देह के साथ ही साथ हार्दिकता, झुकने-झुकाने और ठुमके-ठुमके की दुनिया भी बस जाती है ।" 20

"बाबू" के साथ रहने वाली अधिकांश वेश्याएं रात के ग्राहक नहीं लेती । कुछ अच्छी खाती-पीतीं वेश्याएं दिन के समय भी "बाबू" के रहते ग्राहक नहीं लेती । "पर यदि हालात हालात इतने रहमदिल न हों तो वे उसका ×××× रास्ता निकाल लेती हैं, बाबू बाहर

ग्राहक अन्दर । इस प्रकार का एक अलिखित समझौता इनमें होता है । लेकिन कई बार ये वेश्याएं बेचारी यहां भी धोखा खा जाती हैं । "बाबू" शादीशुदा निकल जाता है, जिसका पता वेश्या को भी नहीं चलता । ऐसे "बाबू" कुछ महीनों या साल- डेढ़ साल बाद अपना काम निकल जाने के बाद उड़नछू हो जाते हैं ।" और इस प्रकार खुशनुमा सीजन के बाद पक्षी फिर उड़ जाता है और वेश्या फिर एक विश्रृंखलित और उजड़ी दुनिया का सामना करती हुई पतिदेव से विपत्तिदेव में रूपान्तरित हुए बाबू के बच्चों के साथ अकेली । या फिर जिन्दगी ने यदि कुछ दम-खम और भरोसा रख छोड़ा हो तो वह अपने घर की "पार्वती" फिर किसी नये "शिव" की तलाश में, अपने जीवन के सत्य, शिव और सुन्दरम् को संवारने केलिए निकल पड़ती है ।" 21

प्रस्तुत उपन्यास में मीना मैडम जो एक चकला चला रही है । उसका भी एक अपना प्रेमी "बाबू" है —" अभी दोपहर का समय है । डेढ़ बजे के आसपास । सभी लाइनवालियां अपने मनमौजी मूड में हैं । मैडम मीना अपने रसिया-मनबसिया प्रेमी पार्टनर के साथ पार्टी आफिस में अपनी कैबिनेट चला रही है ।" 22

माया देवनार का भी एक "बाबू" था —" किसीके दामन से बंधने की दुर्दम्य ललक ने माया देवनार को भी कुछ वर्षों तक एक बाबू के साथ बांधे रखा । उसके एक बच्चे की मां भी बनी, लेकिन पिछले कई सालों से वह उसके आशियाने से उड़न छू हो चुका है ।" 23 "मुरदाघर" की मैना का बाबू पोपट है । पर वह तो मैना का सहारा बनने के बदले उल्टे उसका ही रात-दिन शोषण करता है । मारते-झींकते-गरियाते हुए भी वह उसका दोजख जरूर भरती है ।

इस प्रकार वेश्या-समाज के अन्तर्गत हम तरह-तरह की वेश्याओं को, उनसे जुड़े हुए लोगों — दलालों, भड़वों को, चकलावालियों को "माल" पहुंचाने वालों को, वेश्याओं के बाबुओं को और उनके बच्चों आदि को परिगणित कर सकते हैं ।

§ख§ वेश्या-परिवेश :

अध्ययन की सुविधा हेतु वेश्याओं के परिवेश को हम निम्न-लिखित शीर्षकों में विभक्त कर रहे हैं — /1/ वेश्याओं का स्थानगत परिवेश , /2/ वेश्याओं का कालगत परिवेश /3/ हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं का परिवेश , /4/ मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय वेश्याओं का परिवेश तथा /5/ धार्मिक क्षेत्र की वेश्याओं का ~~क्र~~ परिवेश ।

/1/ वेश्याओं का स्थानगत परिवेश :

परिवेश या वातावरण उपन्यास का एक प्रमुख तत्त्व है । परि-वेश के यथार्थ आकलन से उपन्यास की यथार्थता में वृद्धि होती है और अतएव उसकी विश्वसनीयता बढ़ जाती है । परिवेश में मुख्यतः दो बातें होती हैं — देश और काल । इसीलिए तो परिवेश या वाता-वरण को "देशकाल" भी कहा जाता है । देश अर्थात् स्थान § प्लेस § और "काल " अर्थात् समय § टाइम § । किसी भी वस्तु की यथार्थता का आधार इन दो तत्त्वों पर है । अलग-अलग स्थानों का यथार्थ भी अलग-अलग होता है ! एक स्थान पर जो बात हमें यथार्थ प्रतीत होती है , स्थान के बदलते ही वह बात अयथार्थ हो जाती है । राजस्थान या उत्तर-प्रदेश में लू का चलना यथार्थ होगा , किन्तु कश्मीर में या ~~र~~ स्विटजरलैंड में यदि लू चलने का वर्णन किया जाय तो उसका शुमार अयथार्थ में होगा । ठीक यही बात काल पर भी लागू होगा । ऊपर जो उदाहरण दिया गया है , उसे ही काल के संदर्भ में देखा जा सकता है । गरमी में वह बात यथार्थ होगी , किन्तु सर्दी की मौसम में वही बात अयथार्थ हो जायेगी । प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत हम वेश्याओं के स्थानगत परिवेश पर विचार करेंगे ।

आलोच्य उपन्यासों में "परीक्षागुरु" , "माँ" , "अँधेरी गली का मकान" , "जनानी सवारियाँ" , "चम्पाकली" , "मयखाना" "तीन इक्के" , "घरौंदे" , "मुक्तिबोध" , "दशार्क" , "रेखा" ,

"ढहती दीवारें" , "पतझर की आवाजें " , "मास्टर साहब" , "काजर की कोठरी " आदि का परिवेश दिल्ली का है । "हिज हाईनेस" , "बोरीवली से बोरीबन्दर तक" , "कबूतरखाना" , "मुरदाघर" , "बंटता हुआ आदमी" आदि उपन्यासों में चित्रित परिवेश मुंबई का है । "मछली मरी हुई" तथा "सलाम आखिरी " का परिवेश कलकत्ता का है । "मछली मरी हुई " में न्यूयोर्क का परिवेश भी है । "नदी फिर बह चली" , " नदी नहीं मुड़ती" आदि में पटना का परिवेश प्राप्त होता है । इनके अतिरिक्त "सेवासदन" में बनारस , "आगामी अतीत" में कार्सियांग (पश्चिम बंगाल) , "रामकली" में इलाहाबाद , "प्रेम अपवित्र नदी" (×××× में दिल्ली तथा हरद्वार , "गबन" में कलकत्ता , "स्वर्गीय कुसुम" में जगन्नाथपुर री का , "कंकाल" में बनारस का परिवेश प्राप्त होता है ।

उपर्युक्त उपन्यासों में नगरीय क्षेत्र की बात हुई है । यदि ग्रामीण क्षेत्र की बात करें तो "मैला आंचल" , "इमरतिया" , "कांचघर", "अल्मा कबूतरी" , ' कब तक पुकारूं " , "सूखता हुआ तालाब" , "जल टूटता हुआ" आदि में हमें ग्रामीण क्षेत्र की वेश्याओं का परिवेश प्राप्त होता है ; हालांकि ग्रामीण क्षेत्र में हमें मुख्यतः अप्रकट समूह की वेश्याएं ही प्राप्त होती हैं ।

/2/ वेश्याओं का कालगत परिवेश :

पूर्ववर्ती पृष्ठों में अनेक बार कहा गया है कि वेश्या-व्यवसाय संसार का प्राचीनतम व्यवसाय है और परापूर्व से चला आ रहा है । यद्यपि हमने अपने अध्ययन में आधुनिक या समसामयिक काल की वेश्याओं का ही अधिकांशतः चित्रण किया है , तथापि चर्चा में कहीं-कहीं प्राचीन काल की वेश्याओं का जिक्र हुआ है । प्राचीन-मध्यकालीन काल की वेश्याओं का चित्रण "चित्रलेखा" (भगवतीचरण वर्मा) , "सुहाग के नूपुर" , " दिव्या" , "अवसर" , " संघर्ष की ओर " , "अंतराल" , "वयं रक्षामः " पथप्रज्ञा" आदि उपन्यासों में हुआ है ।

मधु कांकरिया का उपन्यास " सलाम आखिरी" वैसे तो समसामयिक वेश्या-जीवन पर आधृत है , xx परन्तु उसकी नायिका सुकीर्ति के दोनों मित्र बुद्धिजीवी हैं । उनमें भी विजय जो इतिहास का छात्र रह चुका है , फलतः प्रस्तुत उपन्यास में पृ. 123 से लेकर पृष्ठ 128 तक प्राचीन काल की कुछेक वारांगनाओं का चित्रण हुआ है , जिनमें मदनिका , आम्रपाली , कोशा , केशी आदि मुख्य हैं । मदनिका तो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार की "विषकन्या " थी । अपने राजकीय प्रतिद्वन्द्वी पर्वतक को हटाने के लिए चाणक्य के आदेश पर मदनिका को पर्वतक के दरबार में चन्द्रगुप्त द्वारा भेजा जाता है । " राष्ट्रहित की बलिवेदी पर तिल-तिल कर जलती मदनिका और जाने कितनी विष-कन्याएं चन्द्रगुप्त के राज्य में थीं और जिनका नारीत्व राज्यसत्ता के पास बंधक था जिन्हें निर्मम राजनीति के आदेश पर यौवन और प्रणय की अकुलाहट को अनसुना करते हुए अपने "स्व" के अंश-अंश का स्वाहा करना पड़ा था । " [24]

पर्वतक मदनिका के रूप-रस-गन्ध और मोहक आंखों में भाव-विभोर और उन्मत्त हो उठता है । मदनिका के भीतर की स्त्री भी एक बार जाग्रत हो जाती है और सोचती है कि पांचाल नरेश पर्वतक के समक्ष वह अपना भेद प्रकट कर दे कि वह चाणक्य द्वारा भेजी गयी विषकन्या है । " पर तभी उन सरकते बहकते कमजोर क्षणों में एकाएक फिर कर्तव्य-भावना जोर मारने लगी और उन्हीं क्षणों आकुल उन्मत्त पांचाल नरेश के आतुर ओंठ उसके अधरों से जा लगे । लग दिए जाने दिया उसने भी । कर्तव्य भावना के ये क्षण निकल गए तो फिर शायद नहीं कर पाए वह कठोर कर्तव्य ? जन्म से ही थोड़ी- थोड़ी मात्रा में विष पिलाकर बनाई गई विषकन्या के विषैले होंठों का चुम्बन पर्वतक को प्राणान्तक पीड़ा एवं छटपटाहट भरी मृत्यु दे गया । " [25] प्रस्तुत उपन्यास में प्राचीन वेश्याओं के संदर्भ में कहा गया है -- " इतिहासकारों के अनुसार वैदिक काल में गणिकावृत्ति अस्तित्व में थी । वेदों में प्रयुक्त पुनश्चली , महानग्नी

और राम्भा जैसे शब्द निम्नकोटि की गणिकावृत्ति के ही सूचक हैं। जैन और बौद्ध धर्म की जातक कथाएं गणिकाओं के उल्लेख से भरी पड़ी हैं। भारत में दरअसल धर्म एवं राज्य द्वारा गणिकावृत्ति को स्वीकृति इसी युग में मिली। राज्य की देखरेख में ही पनपी। उस युग की सुसंस्कृत एवं कला की आराधक गणिकाएं यूनान की गणिकाओं की जोड़ी की थी। दरअसल भावनाप्रधान हमारे देश में काम-जीवन सदैव ही अमर्यादित रहा। विश्रृंखलित रहा। इसलिए यहां वेश्याएं हर युग में रहीं। बस नाम बदलते रहे। कभी उन्हें देवदासी, सर्वभोग्या, रूपजीवा — तो कहीं उन्हें नृत्यांगना, गणिका, नगरवधू तो कभी तवायफ़, वारांगना, वेश्या — कालगर्ल कसबिन एवं पतुरिया कहा जाता रहा। ... देववेश्या, तीर्थगा {तीर्थ-वेश्या} जैसे शब्द क्या सूचित नहीं करते कि तीर्थस्थानों में भी वेश्यावृत्ति का निकट सम्बन्ध था। उसी प्रकार विषकन्या और विषांगना जैसे शब्दों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि कभी शत्रु-विनाश केलिए भी इनका प्रयोग होता था। यात्रा-प्रस्थान के समय उनका सामने आना शुभ संकेत समझा जाता था। इसलिए उसका एक नाम मंगलमुखी भी है।" 26

/3/ हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं का परिवेश :

हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं का परिवेश भी हाई-फाई ~~होता है~~ होता है। कई तो कान्वेण्ट-शिक्षिता होती हैं। फर्राटे-दार अंग्रेजी बोलती हैं। ये संपन्न - सुखी परिवारों से होती हैं। ये जहां रहती हैं वह परिवेश भी समृद्ध और संपन्न होता है और जहां ये इस उर्वशी-कर्म को अंजाम देती हैं, वह परिवेश भी वैसा ही संपन्न और समृद्ध होता है। उनके "रेट" भी हाई होते हैं। ये "शोर्ट-रेट" पर नहीं चलती, "लोंग रेट" पर ही चलती हैं। अतः उनका "रेट" भी "नाइट" के हिसाब से होता है। उनका एक नाइट का "रेट" पांच हजार से लेकर चालीस-पचास हजार या कई बार लाख तक का होता है। ये तीन-सितारा होटल या

पंचतारक होटल या शहरों के पास के रिसोर्ट या फार्म-हाउस में जाती हैं । यहां जगह की व्यवस्था ग्राहक ही करता है । दलाली का काम बड़ी-बड़ी होटलों के मैनेजर या उनके प्राइवेट एजण्ट करते हैं । उनकी शराब भी ऊँचे प्रकार की होती है । "इम्पोर्टेड " शराब के बिना यहां काम नहीं चलता है । इनमें से कइयों का तो "आई. क्यू. " भी हाई होता है । जो बौद्धिक किस्म के क्लायण्ट होते हैं, वे इस प्रकार की "कालगर्ल" को चाहते हैं । उनको "कालगर्ल", "काल-वुमन" आदि कहा जाता है । कई बार इनके एजण्ट "कोड-वर्ड " का प्रयोग करते हैं । इन वेश्याओं में ऊँचे-संपन्न घरानों की कालेज छात्राएं, ऊँचे-कुलीन ~~घरानों~~× घरानों की स्त्रियां, मोडेल्स, बार-गर्ल्स, ब्यूटी-पार्लर-गर्ल्स, "बी" और "सी" ग्रेड की हिरोइनें आदि होती हैं । "सलाम आखिरी" , " नदी फिर बह चली" , "छाया मत छूना मन " , " डाकबंगला" , "मछली मरी हुई " , कुछपकली " , "नार्वे " , " पतझड़ की आवाजें " , "चिड़िया-घर" , ~~ढहती~~ ढहती दीवारें " , "नदी नहीं मुड़ती" , "चम्पा-कली" , "हिज हाईनेस" आदि उपन्यासों में हमें इस प्रकार की वेश्याएं मिलती हैं ।

"सलाम आखिरी" का जिक्र हम पहले कर चुके हैं । "नदी फिर बह चली" में एक सरकारी आफिसर और उसके सामने प्रस्तुत हुए "माल" की बात भी पूर्ववर्ती पृष्ठों में आ चुका है । "छाया मत छूना मन " की कंचन कैबरे डान्सर है । उसने "ब्लू फिल्मों " में भी काम किया है । "डाक बंगला" में मि. बतरा नामक एक चरित्र है । उसके संदर्भ में कहा गया है --" वह (बतरा) एक चलता-पुर्जा, हर-फन-मौला टाईप का आदमी है । आधुनिक सभ्य एवं उच्च समाज की सामाजिक, नैतिक एवं राजनीतिक भ्रष्टता के कारण ही उसका व्यवसाय चलता है । किसीको परमिट, किसीको कोटा, किसीको लाइसेंस दिलाना ही उसका व्यवसाय है । और उसके गुरों से वह भली भाँति माहिर है क्योंकि सरकार के उच्च अफसरों की

नब्ज़ को वह बराबर पहचानता है ।" [27] ऐसे मि. बतरा जैसे लोगों को हम आधुनिक दलाल कह सकते हैं । उसने दिल्ली में बाकायदा अपना आफिस खोल रखा है । "मछली मरी हुई " में हमें न्यूयोर्क-लंडन , लोसएंजल्स जैसे इण्टरनेशनल नगरों तथा कलकत्ता जैसे "मेट्रो-सिटीज़" का परिवेश मिलता है । उसकी ऐसी- हाई-फाई वेश्या कल्याणी वैसे तो डाक्टरी का पढ़ने अमरीका गई थी , लेकिन फारेन एक्सचेइन्ज की दिक्कत xxx के कारण घर से पैसे आना बन्द हो गये और वह वहीं xxxx भटक गई । वह न्यूयोर्क , xxxxxxxx कैलिफोर्निया और लोस-एंजल्स के कहवाघरों और नाचघरों में चक्कर काटने लगी । ड्रम और आर्कडियन की वहशी धुनों पर सिल्वाना मैनगानो और सोफिया लारेन की तरह नाचने लगी । माडलिंग , कालगर्ल और ब्लू-फिल्मों में काम उसका पेशा हो गया । पोर्ट , शेरी , वारमुथ और शेरोय रम की बोटलों में वह खो गई । [28] "कृष्णकली" में नायिका कली की पालक माता पन्ना एक नृत्यांगना है । नाचना-गाना पन्ना का मातृ-व्यवसाय है । उसकी माँ मुनीर एक सुप्रसिद्ध नृत्यांगना थी और नेपाल के राणा की रखैल थी । उसकी "पीली कोठी" में आने वाले लोग राजा-महाराजा तथा ब्रिटिश सरकार के बड़े-बड़े अफसर हुआ करते थे । पन्ना भी लाट साहब के ए.डी.सी. रोबर्टसन की पुत्री थी और नृत्यांगना होने के बावजूद पन्ना विद्युतरंजन मजूमदार को छोड़कर अपनी तर्जनी का स्पर्श तक नहीं करने देती थी । "पीली कोठी" में नूपुर की झंकार , तबले की थाप , सारंगी की संगत और विभिन्न राग-रागिनियों का वातावरण हमें उपलब्ध होता है । यहाँ आने वाले लोगों का टेस्ट कुछ रायल प्रकार का ही रहता है । "नावें" की मालती सोमजी नामक उद्योगपति की रखैल है । सोमजी जब भी बाहर जाते हैं , वह उनके साथ होटल में ठहरती है । "पतझड़ की आवाजें " की उषा आयेदिन अपने यहाँ पार्टियाँ आयोजित करती हैं और उन पार्टियों में विदेशी शराब सर्व करती हैं । इन्हीं पार्टियों में से वह पैसेवाले

और रूख वाले लोगों को फंसाती है । "चिड़ियाघर" की मिसेज रिजवी भी एक ऐसी ही "सोसायटी-वुमन " है । मिसेज रिजवी का तो स्पष्ट मत है कि आराम से नौकरी करने के लिए अफसर को कब्जे में रखना चाहिए और अफसर को कब्जे में रखा जा सकता है — स्वयं बेवकूफ बनकर या अफसर को बेवकूफ बनाकर । पर दोनों स्थितियों में "चूतिया" तो अफसर ही बनता है ।[29]

"ढहती दीवारें" का अजय हेरोइन , स्मैक , हशिश , चरस, मैण्डेक्स आदि की तस्करी करता है । रातोंरात अरबपति-खरबपति बनने के लिए यह नरपिशाच मौत का सौदागर हो गया है । अपने इस व्यवसाय को फैलाने के लिए उसे हर किस्म के अफसर को खुश करना पड़ता है और उसके लिए वह उनको उनकी रूचि के हिसाब से कालगर्ल भी सप्लाय करता है । अपने फायदे के लिए वह अपनी पत्नी माधुरी या सुप्रिया को भी भेज सकता है । आकाश नामक पत्रकार को फांसने के लिए वह अपनी पत्नी माधुरी को ~~ही~~ ही सुप्रिया नाम देकर उसके साथ विवाह करवा देता है । अजय एक स्थान पर कहता है —" अगर माधुरी चाहे तो किसी भी पुरूष के साथ जा सकती है , मेरे लिए ये प्यार-मोहब्बत की बातें बेकार है । "[30]

"नदी नहीं मुड़ती" की सुषमा राजनीतिक परिवेश की हाई-सोसायटी वेश्या है । राजनीतिक फायदों के लिए वह अपने दैहिक-सौन्दर्य को भुनाती रहती है । "अल्मा कबूतरी" की अल्मा भी इसी राह से गुजरकर राजनीति के शिखर सर करती है । इसी तरह "चम्पा-कली" तथा "हिज हाईनेस " में जो वेश्या-जीवन चित्रित है , उसका परिवेश उच्च कक्षा का है । यहाँ रहन-सहन , पहिनावा , तहजीब, मैनर्स , भाषा , स्थान आदि सब उच्च कक्षा का होता है । यहाँ पान चबानेवाली और जहाँ-तहाँ थूकनेवाली और रफ-टफ भाषा का ~~इस्तेमाल~~ इस्तेमाल करने वाली वेश्याएं नहीं होती हैं । यहाँ सब-कुछ "पोलिश्ड" रूप में आता है ।

/5/ मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय वेश्याओं का परिवेश :

मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय वेश्याओं का परिवेश हमें मुख्यतः "नदी फिर बह चली" , " आगामी अतीत " , "बोरीवली से बोरीबन्दर तक " , "कबूतरखाना" , "मुरदाघर" , " सलाम आखिरी" , "अंधेरी गली का मकान" , "चढ़ती धूप" , "अवसान" आदि उपन्यासों में प्राप्त हो जाता है । यहां एक और तथ्य ध्यातव्य है कि एक ही उपन्यास में हमें कई प्रकार और स्तर के परिवेश मिल सकते हैं । उदाहरणतया ~~"मदी×मदी×बुहारि~~ "नदी फिर बह चली" में पटना की दोनों स्तरों की वेश्याओं का चित्रण है । निम्नवर्गीय और ऊंची सासायटी की कालगर्ल दोनों का चित्रण उसमें है । "सलाम आखिरी" में तो प्रायः लेखिका ने इस विषय के तमाम संभव आयामों को लिया है । अतः यहां अपने आलोच्य विषय के प्रतिपादन के लिए यहां पर मुख्यतया दो उपन्यासों को लिया है — "मुरदाघर" और "सलाम आखिरी" ।

उपर्युक्त उपन्यासों में चित्रित वेश्या-परिवेश पर दृष्टिपात करने से पूर्व जरा मुंबई , कलकत्ता और दिल्ली के मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय वेश्यालयों के वस्तुगत चित्रण पर एक नज़र डालें । भारत में वेश्यालयों की संख्या काफी है । प्रायः हर शहर-कस्बे में लालबत्ती विस्तार होता है । वेश्यालय प्रायः बस ~~अड्डों~~ अड्डों और रेल्वे स्टेशनों के पास होते हैं । चाय की दुकानों या राजमार्गों के ढाबों के पीछे छोटे-छोटे कमरे होते हैं , जहां देह व्यापार चलता है । कुछ ढाबों में लड़के भी उपलब्ध कराए जाते हैं । [31] कई बड़े शहरों के वेश्यालय तो काफी पुराने होते हैं , कुछ तो सदियों पुराने । सर्वप्रथम हम मुंबई के ऐसे लालबत्ती विस्तार के परिवेश पर एक नजर डालें ।

मुंबई भारत का~~×व्यवसायिक×केन्द्र×~~ व्यावसायिक केन्द्र है और जीवंत फिल्म-उद्योग का केन्द्र भी और इसीलिए यह सेक्स-उद्योग की भी राजधानी है । शहर के कमाठीपुरा और फोकलैण्ड रोड के ~~लालबत्ती~~

वेश्यालयों पर काफी शोध हो चुका है । कमाठीपुरा की गलियों में वेश्यालयों की कतार-कतार की लगी हुई मिलती हैं । उनमें से अधिकांश वेश्यालय छोटे होते हैं और उनमें एक कमरा सड़क की ओर खुला हुआ होता है जिस पर छोटी बेन्चें लगी हुई होती हैं । घर के दरवाजे पर छः से दश तक लड़कियां ग्राहकों की प्रतीक्षा में खड़ी या बैठी होती हैं । बाहर के इस कमरे के पीछे लकड़ी से घिरे छोटे-छोटे खाने होते हैं जिनकी औसतन लम्बाई दो मीटर और चौड़ाई एक मीटर होती है । इनमें पतली दरी-सी बिछी रहती है जो कल्पना-शून्य यौन-क्रिया के लिए जगह जुटाती है । छत से एक टिमटिमाता बल्ब लटका होता है । कुछ बेहतर वेश्यालयों में पंखा भी होता है । वेश्याएं यहां माहौल को आकर्षक बनाने के लिए लकड़ी की दीवारों पर भारतीय फिल्मी हीरोइनोंकी उत्तेजक तस्वीरें भी चिपकाती हैं । दरी के पास कुछ नकली फूल और गहने रखे होते हैं । लकड़ी के इन खानों में या तो दरवाजा लगा होता है या परदा टंगा होता है । लेकिन आवाजें खूब आती रहती हैं, यौन क्रियाओं की, खास कर तब जब वेश्याओं की मांग बढ़ी हुई होती है । दूसरे वेश्यालय कुछ ज्यादा नफीस होते हैं लेकिन वे उनके निवासियों के लिए जेल समान होते हैं । कुछ वेश्यालयों में बस एक ही दरवाजा होता है जिस पर पहरेदार तैनात होता है और एक घण्टी लगी होती है । इसकी वेश्याएं बाहर नहीं निकलतीं और वे ग्राहकों का इन्तजार करने के लिए बाहर बेंच पर भी नहीं बैठतीं । ग्राहक उनके पास आते हैं । कमाठीपुरा के वेश्यालयों में करीबन 2000 वेश्याएं काम करती हैं ।[32]

फोकलैण्ड रोड और उसकी गलियां कमाठीपुरा के पास में ही हैं । ये दोनों इलाके मिलाकर एक बड़े सेक्स-बाजार का निर्माण करते हैं ।फोकलैण्ड रोड को कमाठीपुरा से कमतर वेश्या इलाका माना जाता है । यहां वेश्याओं को लकड़ी के खाने भी मयस्सर नहीं है । बिस्तरों के बीच परदे लगे होते हैं और कुछ कमरे तो भीड़ भरे डारमिटरी जैसे लगते हैं । गलियों में खड़ी वेश्याएं ग्राहकों को सस्ते में हर तरह

यौन-क्रिया का आनंद लेने के लिए चीख-चीख कर बुलाती हैं । कुछ तो पांच रुपये में भी अपनी सेवा देने के लिए तैयार रहती हैं । उससे कम कीमत वाला या उदास माल शायद ही कहीं और मिले । फोकलैण्ड रोड की अंदर की गलियों और पहुंच से दूर के वेश्यालयों में नयी हासिल की गई औरतों के लिए विशेष आरक्षित कमरे होते हैं । बच्चों को अटारी में रखा जाता है । इसे साबित करना बहुत कठिन होता है क्योंकि यह धंधा बहुत ही गोपनीय तरीके से चलता है । बाल-वेश्याओं को तो बहुत ही छिपाकर रखा जाता है । कमाठीपुरा और फोकलैण्ड रोड पर लड़कियों और जवान औरतों को "बन्द" वेश्यालयों में रखा जाता है । ऐसा काफी युवा या तस्करी या जबरन धन्धे में लायी गयी लड़कियों के साथ किया जाता है । इस वर्ग में नेपाली लड़कियां ज्यादातर आती हैं । उन्हें आमतौर पर बेहतर वेश्यालयों में रखा जाता है, जहां पानी, एयरकंडीशनिंग आदि की व्यवस्था होती है । नयी किशोरवय की लड़कियों को अच्छी आमदनी होती है । ऐसी वेश्याओं को मुंबई में "पिंजरेवाली वेश्याएं" कहा जाता है । वे पिंजरे में तो नहीं रहतीं मगर उनका जीवन पिंजरे के जीवन जैसा ही होता है । गली से अंधेरी संकरी सीढ़ियां ऊपर लोहे की जालियों वाले कमरों में जाती हैं । दरवाजे पर पहरेदार तैनात होते हैं । जालियों से झांकतीं लड़कियां भी कभी-कभार दिख जाती हैं । जब तक उनकी "सिझाई" नहीं हो जाती, बाहरी दुनिया से उनका संपर्क बस इतने-भर का होता है । औसत औरत को इच्छुक वेश्या में तब्दील करने के लिए उसे काफी सिखाने-पढ़ाने की जरूरत होती है । इसे "सिझाना" कहते हैं । यह ऐसा ही है जैसे खाने के लिए मांस को सिझाया जाता है । "सीझने" के बाद अनिच्छुक वेश्या अपने धंधे को कबूल कर लेती है । कई जगहों पर उसके लिए कोई विकल्प नहीं होता ।" 33

कलकत्ता में सोनागाछी सबसे बड़ी वेश्या-बस्ती है । यहां xxxxxx की वेश्याओं को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है — क,

ख और ग. । सबसे ऊंचे "क" वर्ग की वेश्याएं जवान और सुंदर होती हैं, उनके कमरों में अच्छे फर्नीचर होते हैं और सफाई भी रहती है । लेकिन लड़कियां बहुत दिनों तक "क" वर्ग में नहीं रहतीं क्योंकि बाजार में आने वाली नयी और जवान लड़कियों से उनका मुकाबला होता है । अतः कालान्तर में वे "ख" और फिर "ग" वर्ग में चली जाती हैं । नीचले वर्ग की लड़कियों को प्रायः 6×10 फुट का कमरा मिलता है । कमरा दो-तीन वेश्याओं के बीच होता है और चूहों से भरा हुआ रहता है । यही उनका घर भी होता है और ग्राहकों को लेने की जगह भी । उनके बिस्तर परदों से बंटे होते हैं । अगर ऐसा संभव नहीं होता वेश्याएं और ग्राहक बारी-बारी से उस कमरे का इस्तेमाल करते हैं । पैसे पर सेक्स का यह कारोबार जल्दी-जल्दी में निबटाया जाता है ।

सोनागाछी दो-तीन मंजिला मकानों से भरी गलियों वाला इलाका है । संकरे, उबड़खाबड़ गलियारे छोटे-छोटे कमरों तक पहुंचाते हैं । मकान सब बड़े खस्ताहाल होते हैं । बीच में सीलन भरा आंगन होता है । यहां पानी के नल लगे हुए होते हैं, जहां इसके निवासी नहाना-धोना करते हैं । करीब बीस औरतों के लिए एक शौचालय होता है । वे खाना अपने कमरों में बनाती हैं । शहर की दूसरी वेश्या-बस्तियों की तरह यहां भी वेश्याएं सज-धजकर, चमकीली साड़ियां या पश्चिमी पोशाक पहनकर गलियों में सवेरे-सवेरे खड़ी हो जाती हैं । वे ग्राहकों को पुकारती हैं, उन्हें अंदर चलने की मनुहार करती हैं । वहां दलाल भी ग्राहकों की तलाश में घूमते रहते हैं । वे उन्हें बताते हैं कि अंदर कमरे में युवा ××××, खूबसूरत लड़की बैठी है और जो बहुत कम पैसे पर मिल सकती है । कुछ लोग बताते हैं कि सोनागाछी में बाल-वेश्यावृत्ति समाप्त हो गई है, लेकिन यह वहम है । स्वयं एक बाल-वेश्या इस संदर्भ में कहती है — " मुझे 12 वर्ष की उम्र में वेश्यालय में बेचा गया और मैंने तुरंत काम शुरू कर दिया । मेरी जैसी दूसरी लड़कियां भी थीं लेकिन मालकिन हमें छिपाकर रखती थी । वह हमें कहती थीं

कि हम अपनी उम्र अठारह बताएं । कुछ लड़कियां तो मुझसे भी छोटी थीं । वे बच्चियों जैसी थीं लेकिन उन्हें अलग रखा जाता था और हम उन्हें कभी-कभार ही देख पाते थे ।" [34]

अब दिल्ली के लालबत्ती विस्तारों पर भी एक दृष्टि डाल ली जाए । दिल्ली थोड़ा अलग चित्र पेश करता है । वह बताता है कि दक्षिण एशियाई शहरों में सेक्स-बाजार किस दिशा में जा रहा है । जी.बी. रोड पारंपरिक किस्म की वेश्या बस्ती है, जहां की तीन-चार मंजिली इमारतों में करीब 85 वेश्यालयों में करीब चार हजार वेश्याएं रहती हैं । [35] हर वेश्यालय में पहुंचने के लिए नीम-अंधेरी गलियों और खतरनाक सीढ़ियों से दुपरदू होना पड़ता है । ऊपर की मंजिलों पर 25 वर्ग मीटर का कमरा होता है जिसमें सोने के लिए तख्त बिछा होता है । मुख्य कमरे के बाहर रसोईघर और शौचालय वग़ैरह होता है । छः - आठ कमरे होते हैं जिनमें कोई खिड़की नहीं होती और कमरे में केवल एक छोटा बिस्तर आ सकता है । ऐसे मकानों में 25 से 30 तक वेश्याएं रहती हैं । यह उनके रहने की जगह भी है और ग्राहकों को निपटाने की भी । लड़कियां जमीन पर बैठ जाती हैं और ग्राहक उनका चुनाव करते हैं । यह ऐसा ही लगता है जैसे मवेशियों का बाजार लगा हो और ग्राहक रंग-बिरंगे जानवर की खरीदारी कर रहे हों । इसके बाद लड़कियां और ग्राहक छोटे कमरे में कुछ देर के लिए चले जाते हैं और अपना यौन-कर्म निबटाकर निकल आते हैं । यह काम फटाफट और बिलकुल यांत्रिक तरीके से होता है । इस प्रकार की वेश्याओं का "रेट" यहां 70 रुपये के आसपास होता है । 2005 के अंतिम सर्वेक्षण के अनुसार यह आंकड़ा दिया गया है । [36]

दिल्ली में जिस्मफरोशी के लिए लायी जाने वाली लड़कियों को जी.बी रोड के "सिखाने" की जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि तस्करी से उड़ाई गई लड़कियां वहां पहुंचते ही इधर-उधर के इलाकों में फैला दी जाती हैं । ये स्थान वेश्यावृत्ति के लिहाज

से अधिक सुरक्षित होते हैं और जहां स्वयंसेवी संगठनों या पुलिस के हस्तक्षेप की संभावना कम से कम होती है । वेश्यावृत्ति का स्वरूप भी अब काफी बदल रहा है । वह अपने पारंपरिक स्थानों से अलग भी फैल रही है । अभी हाल में ही दिनांक 1-8-2007 को "आज तक चैनल " पर राजस्थान के शिक्षा-मंत्रालय में इस प्रकार का सेक्स-रैकेट पकड़ा गया है । अतः कई कारणों से उसका आकलन मुश्किल होता जा रहा है । निचले स्तर की जिस्मफरोशी में भी यह देह-व्यापार केवल पारंपरिक वेश्या-बस्तियों तक महदूद नहीं रहा है । बल्कि वह पूरे शहर में फैल रहा है । दिल्ली में पहाड़गंज के आसपास की होटलों में भी यह जिस्मफरोशी का धंधा चोरी-छिपे चल रहा है ।

यहां एक बात स्पष्ट रूप से बता देना आवश्यक है कि ये सब गोरखधंधे पुलिस की नाक के नीचे और जानकारी में होते हैं । लुइज़ ब्राउन ने अपने शोध-मूलक ग्रन्थ "यौन दासियां : एशिया का सेक्स बाजार " में एक स्थान पर बताया है : कोलकाता के किसी वेश्यालय में जब नई लड़की आती है तो पुलिस को इत्तिला के साथ फीस दी जाती है । पुलिस की जानकारी के बिना वेश्यालय में शायद ही कुछ होता है । इसी तरह पुलिस-मुख्यालय में शायद ही ऐसा कुछ होता है जिसकी जानकारी वेश्यालयों के मालिकों को नहीं होती । अगर किसी छापे की योजना बनती है तो पुलिस वाले वेश्यालयों को उसकी पूर्व-सूचना देकर उसकी फीस वसूल लेते हैं ।"[37] मधु कांकरिया ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली में इसे " आई.जी - बाईजी व्यवहार " कहा है ।[38]

"मुरदाघर" में वेश्याओं का जो परिवेश प्राप्त होता है वह तो एकदम निम्न-स्तरीय है । उपन्यास के प्रारंभ का ही एक दृश्य देखिए : " चलते हैं डंडे हवलदारों के । भागती हैं रंडियां ... लथपथ । पुरानी धोतियां फट-फट जाती हैं पैरों में उलझ । रुकना पड़ता है ... भागना पड़ता है ... दम तोड़कर । सिर्फ पसीना और जोर-जोर से चलतीं

सालें । पीछे रह जाती है बशीरन । बढ़ती उम्र ... थकता जिस्म । हाथ पकड़ लेता है ... सिपाही । सड़ ... सड़ । गिर जाती है जमीन पर ... पकड़ लेती है पैर । नहीं , नहीं । अब फिर नहीं आएगी इधर । माफ कर दो । मगर रहम नहीं करता सिपाही । घसीटता है ... ले जाता है हवलदार के पास । कहां गई बाकी रंडियां ... मालूम नहीं । रेल की हद तक दौड़कर लौट आए सिपाही । ... और सिगरेट और चाय ... दारू भट्ठीवालों की ... मोटे पाइप के पास आड़ में खड़ी मैनाबाई । गिलास पर गिलास ... किस्तय्या की दारू ... देना रे । एक नौटांक और दे दे । सच्ची बोलती कल तेरेकू सारा पइसा दे देऊंगी । इतना भरोसा नई क्या मेरा ?" [39]

वेश्याओं की इस बस्ती में दारूवाला , मटकावाला , जेब-कतरे , चोर , उठाइगिर सभी प्रकार के लोग रहते हैं । यहां तक कि उसमें हिजड़े भी रहते हैं । ग्राहक को लेकर इन वेश्याओं में अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं । गाली-गलौच से लेकर मारामारी तक की नौबत आ जाती है । बशीरन और मैना के बीच झगड़ा होता है :

" किस्तय्या परेशान । धंधे का टाइम ... सारे कुली देख रहे हैं तमाशा ! इन सालियों को भी मिला यही टाइम । भीड़ को चीरता हुआ पहुंच जाता है । गुंथी हैं दोनों ... बशीरन ऊपर । ... रंडी ! और सोएगी बाबू के संग ? बोल ? बोल छिनाल ? ... सिर उठा-कर जमीन पर पटकती है । ... बोल ना । बोलती क्यूं नईं अब ? बोल ... और बोल ... । .... दोनों को दोनों हाथों से उठाता है किस्तय्या । ... मादरचोद । रोज इधर आके लफड़ा करता । चल भाग इधर से । ... और तू ! तेरेकू मैं कायके वास्ते दारू दिया ? इधर दादागिरी करने के वास्ते ? तेरी भैन कू मारू ... निकल इधर से .... । " [40]

मैना को पोपट ढाई रुपया खर्च करके लाया था । बड़े-बड़े वायदे किए थे , पर अब मैना की कमाई भी शराब और मटके में फूंक देता है । मैना की व्यथा का चित्र देखिए उसके ही शब्दों में —

" चिल्लाती है ... कब होगा तेरा वो एकच धंधा ? मेरी मैयत का पीछु ? सुबु से चुल्हा नईं जला । शाम से कुतिया का माफक रौंड मारती । एक घराक नईं मिलता । मर गए सबके सब । रोज ऐसाइच । मैं क्या जिनावर हूं बोल ना । क्या बोला था तू ... चाली में खोली लेके देऊंगा ... दो बखत का रोटी ... लुगड़ा ... बिलाउज ... सनीमा लेके जाऊंगा ... ये करूंगा ... वो करूंगा । किधर गया वो सब ? गधी की गांड में घुस गया ? साला झूटा । क्या हाल कर दिया मेरा ? आज इसके नीचू तो कल उसके । फिर भी भूकी मरती । उधर छोकरा सड़ेला-पड़ेला खाता । कायकू सब झूटा बात किया तू ? " 41

यह जो परिवेश है वह ऊपर चित्रित फोकलैण्ड रोड या कमाठी-पुरा वाला भी नहीं है । मुंबई में रेल की पटरियों के दोनों तरफ मीलों लम्बी झोंपडपट्टियां दिखती हैं । ऐसी ही एक झोंपड़पट्टी है माहिम की । वहां का परिवेश लिया है "मुरदाघर" के लेखक ने । इस प्रकार का धंधा करते-करते कई बार वेश्याएं गन्दे-घिनौने रोग की शिकार हो जाती हैं । उसके बाद उनकी क्या गत होती है, वह हम रोजी के संदर्भ में देख सकते हैं —" एक साल । कुछ हो गया रोजी को । पहले ज़ख्म हुआ पैर की उंगली में । फिर होने लगे बहुत-से ज़ख्म । फिर होते चले गए ... ज़ख्म । फिर होते चले गए ... ज़ख्म ... या ज़ख्मों के निशान ... जो फिर नहीं भरे । फिर कटने लगी एक उंगली । सिकुड़ने लगीं सब उंगलियां । उठने लगी हलकी-हलकी बू । चिल्लाने लगीं रंडियां ... ए ... इधर नईं । उधर ... दूर बैठ ... । छिनने लगा सबकुछ धीरे-धीरे । झोंपड़ा चला गया ... और सब चले गए । रह गई एक उम्मीद ... अब तक नहीं गई । फुटपाथ के अंधेरे कोने में मैले गुदड़ों के बीच रखा है एक मैला डिब्बा । डिब्बे में तस्वीर ... जो आखिर खिंच गई थी ... एक और एक ... दो रुपये में । मगर कहां चला गया वह तसवीरवाला ? " 42

कैसे-कैसे लोग यहां इन बस्तियों में रहते हैं, इसका एक चित्र देखिए : " भिनभिनाकर जाग जाती हैं मक्खियां ... फिर सो जाती हैं। एक अंधेरे कोने में जागता हुआ एक शराबी ... चीख रहा है। दे रहा है गालियां ... किसी नामालूम को। गालियां ... गालियां .... और गालियां ... नामालूम के नाम। नामालूम ... जिसमें सबकुछ ... एक आदमी ... एक दुनिया ... एक धरती ... आसमान ... इनसान .... भगवान ... ऐंठती हुई ज़ुबान ... उगलती जा रही है। .... तेरी मां की ... चूत ... साला भैनचोद .... मु नु नु नई मिलेंगा ... मु मु मत मिल। हां हु हु हम बोलता ... ए ए ए तेरी मां की चूत। हुक। ए ए तेरी भैन की चूत ... हुक ... नु नु नई आता ...." 43

और यहां होते हैं इन वेश्याओं के बच्चे, जिनमें शायद ही किसीको अपने बाप का नाम याद होगा। गनिया, गोपू, राजू, मम्मद जैसे बच्चे। मुंबई की होटलों के पिछवाड़े जो कचरा फेंका जाता है उसमें खाना ढूंढते रहते हैं और जूठा-ऐंठा-सड़ा हुआ खाते रहते हैं। किसी दिन भाग्य से अगर मुरगे की टांग मिल जाती है तो ये कई-कई दिन तक उसकी बातों में खोए रहते हैं। उनके सपनों की इन्तिहा है — मुरगे की अधखायी टांग। "चमकती है राजू की आंखें। ... वो दिन कि नई ... मुरगे की पूरी टांग मिली थी मेरे कू ... पूरी टांग ... ये इत्त्वाली बड़ी। और बिरियानी भी। क्यूं रे मम्मद ... है कि नई ? ... फिर एक कुत्ता आ जाता है नजदीक ... किसी तरह। फिर एक पत्थर लगता है ... भाग जाता है चिल्लाता हुआ ... भागते हैं और कुत्ते। बहुत दूर नहीं जाते ... लौट आते हैं। उड़ते हैं कौए ... उड़-उड़कर बैठ जाते हैं। कोई नहीं हटता वहां से। छोकरे ढूंढते रहते हैं पुरानी जूठन में ... कुछ नहीं मिलता। न हड्डी, न पाव रोटी का टुकड़ा। कुछ भी नहीं। गालियां बकते हैं छोकरे ... साला भैनचोद ... कुछ भी नई मिलता ... ।" 44

रोशनियों के खंभे और रंडियों की कतार लगी है । मंगला, नूरन, चन्द्री सबकी नज़र पड़ती है एक मनचले पर । उसके पास कुछ भी नहीं था । खाली जेब, फकत आँखें सेंकने आया था । मंगला उसे चाय-पानी के वास्ते कुछ निकालने केलिए कहती है । पर वह भी नहीं था उसके पास —" चिल्लाती है मंगला ... गांडू । तू क्या ठोकेंगा । साला हिजड़ा । मेरे साथ कायकू साएंगा ... अपनी माँ के साथ सो .... बहन के साथ सो । ... बंदर की अउलाद ... आंखी सेंकेंगा खाली । .... मगर चन्द्री को कोई मिल गया ... हर जगह यही बात । शांति पारवती से कह रही है ... बशीरन नूरन से ... नैना जमीला से ... रोजी को भी मालूम हो गया है । बता रही है मैना से ... तीन रुपया ली है चन्द्री ...पहलेइच ले ली ... बोट का हमाल है कोई तो भी ..." [45]

मतलब कि दो-दो तीन-तीन रुपये में ये वेश्याएं देह का सौदा करती है । किसीको ग्राहक मिल जाए तो चारों तरफ सनसनी फैल जाती है, जैसे कुबेर का खजाना मिल गया हो । उनकी गरीबी और बदहाली की कल्पना भी रोंगटे खड़े कर देनेवाली होती है । किसी वेश्या को गर्भ रह जाता है तो उसे खुशि नहीं होती, बल्कि दुःख होता है —" एक झोंपड़ा ... अंधेरा कोना ... पड़ी है मरियम । दिन गिन रही है । कब निकलेंगा पेट में से ?" [46] गर्भपात भी नहीं करा सकती, क्योंकि जहां खाने के ठिकाने नहीं है वहां डाक्टर की फीस कहां से लायें ।

एक नयी छोकरी आयी है । रात-दिन रोती रहती है । मैना उसे बहुत पूछती है पर वह अपना नाम नहीं बताती । यहां मुंबई की इस बस्ती में ये वेश्याएं कैसे-कैसे लायी जाती हैं —" नई छोकरी का किस्सा ... सुनती जाती है मैना चुपचाप । बड़ा पैसादार है छोकरी का बाप ... काठियावाड़ में । खूब जगह ... खेत ... गाय ... भैंस ... सबकुछ । मगर छोकरी को हो गई मुहब्बत ... भागकर

आ गई बंबई में ... मुहब्बत झूठी निकली । किसीसे ले लिये कुछ रूपये और छोड़कर चला गया मुहब्बत करने वाला ।"[47]

मैना उससे बहुत पूछती है उसका नाम , उसके बाप का नाम , गांव का नाम , पर वह कुछ नहीं बताती । लड़की को उसका बाप मार डालेगा इस बात का डर नहीं है , मरने से वह नहीं डरती , मगर उसके बाद उसके पिता या भाई को जेल में जाना पड़ेगा । यह उसे मंजूर नहीं । फलतः वह अब इधर ही रहना चाहती है । वह मैना से कहती है —" ये धन्दा नई करने का मेरे कू । कोई का वासण भी साफ करेंगी । पन ये धन्दा नई मंगता मेरे कू ।"[48] मैना उसे कहती है —" तू एकदम पग्गल है । मेरा तेरा जैसा इनसान कू तो इधर भांडी धीसने कू भी नई मिलता । समजी क्या ? मिलेंगा भी तो लोक अपने से से येच काम करवाने वाला है अखेर में । मैं सब करके देख ली । सादी भी बनाई ... तो भी वो का वोच ..."[49]

वेश्याओं को लोकअप में रख दिया जाता है । वहां चमेली नामक वेश्या मैना , नूरन , बशीरन आदि को अपनी कहानी सुनाती है । पकड़े जाये बाद और 'होम' भेज दिए जाने के बाद भी वहां से "भाई"लोग किस प्रकार लड़कियों को निकाल ले जाते हैं और फिर से उनको वेश्यालयों में डाल देते हैं , उसका कच्चा चिट्ठा खोलती है चमेली । पुलिस और बुर्दाफरोश लोगों का जो चोली-दामन वाला साथ है , उसे भी यहां बेपर्द किया गया है — " मैं देखने को छोटी — पन भौत दुनिया देखी मैं ... पुच । क्या समझी ? जभी पैला टैम पकड़ा मेरेकू ... इधर इंगले नामका साब होता । साला रात कू किया मेरे कू ... फिर ये मोटे डंडे से मारा । बोला कि कोई कू बोला तो तेरा जान ले डालूंगा । क्या समझी ? पुच । भौत छोटी थी वो टैम में । मेरे कू क्या मालूम । करवा ली और मार भी खाली चुपचाप । भौत डर लगा मेरे कू । तीन दिन लोकप में रखे मेरे कू ... पीछे होम में डाल दिए ... पुच । महीना-

भर उधर रही । पीछू एक भाई आया मेरा । साब उसने पांच सौ रूपया लिया और मेरे कू भेज दिया साथ में । ... वो टैम ताड़देव में एक मुस्लिम घरवाली होती । ये मेरा भाई उधरिच रखा मेरे कू । उधरिच धन्दा करती हैं मैं । पुच । तीन टैम गई होम में और तीन भाई आया मेरा । कोई पांच सौ रूपया दिया साबकू ... कोई चार सौ । अभी ये टैम क्या करेगा मालूम नई ... क्यूं यार ? नींद आता क्या ? पुच । " 50

ये लोग कितने गन्दे माहौल में रहते हैं । लोकप में एक कोलाबावाली है । औरों की तुलना में वह थोड़ी मालदार है । उसके पास नहाने का खुशबूदार साबुन है । मंगूबाई कैसे तो भी मार लायी है और अब सब पकड़ी हुई वेश्याएं उस एक साबुन पर टूट पड़ी हैं । " पानी जमा होता जा रहा है । मगर चमेली बैठी है संडास में । चिल्लाती है नूरन ... तू संडास में बैठी । दरवाजा तो बन्द कर ... । .... हंसती है चमेली । काय कू यार ? जो तू वोच में । फिर दरवाजा कायकू बन्द करना ? " 51 यह गन्दा माहौल किसी को कितना ढीठ बना देता है और किस प्रकार उसकी मासूमियत को छिन लेता है, उसे हम यहां देख सकते हैं ।

दो-तीन महीनों में एकाध बार "रेड" पड़ जाती है, तब कुछ वेश्याएं भाग खड़ी होती हैं, और कुछ पकड़ा जाती है । इनमें बशीरन जैसी वेश्याएं भी होती हैं जिनको पकड़े जाने का कोई मलाल नहीं होता, क्योंकि बढ़ती उम्र के कारण अब उनको ग्राहक नहीं मिलते हैं, ऐसी स्थिति में कुछ दिन मुफ्त में खाना तो मिल जाता है । नीली गाड़ियों में बिठाकर इन रिमांड वालियों तथा जमानतवालियों को ठूंसकर भरा जाता है । एक चित्र द्रष्टव्य है : "भागती हुई नीली गाड़ी में बैठी हैं रिमांडवालियां ... जमानत-वालियां । चारों तरफ ... लोहे की जालियां । जालियों के उस

तरफ़... हवलदारनियाँ । सिर से नीची हैं खिड़कियाँ । बाहर देखने के लिए झुकना पड़ता है नीचे । दौड़ रही हैं गाड़ियाँ । भाग रही हैं सड़कें... सड़कों पर सारी दुनिया । चुपचाप बैठी है मैना... चुपचाप बैठी हैं सब-की-सब... मोटे चश्मेवाली बुढ़िया भी । कमानी की जगह बँधा हुआ धागा । ... रोज ऐसा ही ... जब जाती हैं अदालत ... चुप होती हैं सब-की-सब । सिर झुका-झुका कर देखती जाती हैं भागती हुई सड़कों को । .... (अदालत में कुछ पुराने असफल बूढ़े वकील) काले कोटों पर लगे हुए पैबन्द । अधेड़ और बूढ़े जिस्म ... वक्त से कदम मिलाने की कोशिश में घिसटते हुए । ... यस । हमकू बोलो । हम कर देंगा तुम्हारा काम । क्या है ? एफीडेविट ? नोटिस ? पिटीशन ? दो रुपया नहीं तो रुपिया देना । ... नहीं तो बस पचास पइसा ... । अंदर से ताक रही हैं रंडियाँ ... झोंपड़पट्टीवाली । .... सच्ची ... अइसाच तो अपुन लोक भी करता । नई' क्या ?'[52] कितना बड़ा व्यंग्य ? कितनी बड़ी वक्रोक्ति ? और अनजाने ही ।

बीच में थोड़े समय के लिए सुधर जाता है पोपट । मेहनत-मजदूरी का रास्ता पकड़ लेता है । पर जी-तोड़ मेहनत के आगे फिर से उसमें मैना को धंधा कराने का विचार आता है । मैना और पोपट का संवाद देखिए :

' तो गई क्या ? मेरी बात तो सुन । ये इतना बड़ा-बड़ा गोनी (बोरी) पीठ के ऊपर रखके ऊपर चढ़ा मैं । चार माला । छे माला । दिन भर काम किया । तब मेरे कू मिला पाँच रुपिया। समझी क्या ? दो खतम हो गया चा-पानी और राइस-प्लेट में । .... मैना । ए मैना । सुनती नई क्या तू मेरी बात ?

' सुनती हूँ । बोल क्या बोलता ?

' बोलता क्या ? कुछ नई बोलता । खाली अइसा बोलता कि मौत हड्डी तोड़ा और पाँच रुपया मिला । क्या होता है पाँच रुपिया में । तेरा-मेरा पेट भी भरने वाला नई' ।

" तो पीछू क्या करूं मैं ? चालू कर देऊ अपना धन्दा ? और तेरे कू ला-लाके दूं खाने के वास्ते ?

" नई । अइसा किधर बोला मैं । मैं तो खाली अइसा बोलता कि अपुन ये हाल में से बाहर निकलने वाला नई । तू मरे कि मैं मरूं ... हाल वोका वोच रहने वाला है ।

"चुप है ... मगर बोलती है मैना । ... वोका वोच रहनेवाला । मालम है मेरे कू । पन भोत मरी मैं । अब नई होता मेरे से । कुछ भी कर । पन मेरे से मत बोल अभी । कुछ भी कर । पन मेरे कू उधर जाने का वास्ते मत बोलना । समझा क्या ? " 53

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि यह "मुरदाघर" इन छोटे-छोटे लोगों के सपनों का भी मुरदाघर है । मैना का एक सपना है । पोपट और राजू का सपना है । जब्बार का सपना है कि एक बार लम्बा हाथ मार के हसीना और अमजद को इस गन्दी बस्ती से दूर ले जायेगा । पर ऐन वक्त पर पुलिसवाले दबोच लेते हैं । जब्बार की गलती यह हो गई कि उसने किसी "स्मगलर" के यहाँ चोरी की । इस संदर्भ में एक दूसरा चोर नत्थू कितनी सटीक बात करता है -- " येई तो तुम लोक का गलती है । तुम लोक सोचता इस्मगलर के घर में चोरी करेंगा तो पोलिस को नई बोलेंगा और पोलिस कुछ नई करेंगा । पन मैं सब लोक कू येच बोलता ... किधर भी चोरी करना ... पन इस्मगलर ... दारूवाला ... रण्डीवाला ... इधर कभी भूल के भी नई जाने का । नई तो पोलिस जान से मार डालेगा मार-मार के । कब्भी नई छोड़ेंगा । कायकू ? अरे तेरे कू मालूम तो है कि कायकू नहीं छोड़ेंगा ? ... सारा पोलिस खाता इधर सेच चलता ।" 54

जब्बार का सपना भी पूरा नहीं होता । रोजी का सपना कि कभी वह "फोटूवाला" आकर उसे ले जायेगा । कभी पूरा हो नहीं सकता । पोपट और राजू का सपना भी दम तोड़ देता है । एक

अकस्मात मैं रेल से कटकर पोपट मर जाता है । " झोपड़े के बाहर खड़ी है मैना ... खड़ी है भीड़ ... सारी दुनिया । आवारा छोकरे । गन्या । मादया । अन्ना । ताशवाले । बीड़ीवाले । जूठनवाले । घशीरन । मलबारी । भैया । हिजड़े । क्या है ? पूछती है ... हैरान ... डरी हुई । चुप है भीड़ । "[55] आखिर एक हिजड़ा बोल देता है मैना को कि पोपट मर गया रेल से कटकर ।

इन सब उदाहरणों को हमने यहां इसलिए प्रस्तुत किए हैं कि इन से इन वेश्याओं का परिवेश बिलकुल स्पष्ट हो जाता है । "मुरदाघर" में चित्रित वेश्याओं का स्तर एकदम निम्न कोटि का है । रेल के पटरियों के आसपास की मुंबई की झोंपड़पट्टी । साक्षात् नरकभूमि । इस संदर्भ में डा. पारूकान्त देसाई लिखते हैं — " नियोन लाइट से जगमग सफेद इमारतों वाली सफेदपोश बस्ती के ~~करेन्ट्रास्ट~~ कोन्ट्रास्ट में बम्बई की एक गन्दी , धिनौनी , सड़ांध से भरी हुई झोंपड़पट्टी की सच्ची यथार्थ तस्वीर को लेखक ने इस खूबी से उभारा है कि हमारे सभ्य समाज की सभ्यता परत-दर-परत खुलती गयी है और वह अपने नग्न स्वरूप के साथ संवेदनशील पाठक की चेतना के कठघरे में आकर उपस्थित हो जाती है । "[56]

महानगरों की इमारतों के समानान्तर फुटपाथों पर भी लाखों-करोड़ों मनुष्य बसते हैं और जो कुत्तों , कौओं और रेंगते हुए कीड़ों से भी बदतर जिन्दगी जी रहे हैं । इनको हम समाज की जूठन और गन्दगी के अतिरिक्त कुछ नहीं कह सकते ।

तो दूसरी तरफ मधु कांकरिया द्वारा प्रणीत उपन्यास "सलाम आखिरी" में हमें सोनागाछी , खिदिरपुर , बहु बाजार , कालीघाट , बैरकपुर आदि कोलकाता की लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं का परिवेश प्राप्त होता है , जिसका वस्तुलक्षी आलेखन लुइज़ ब्राउन की किताब के आधार पर पूर्ववर्ती पृष्ठों में हो चुका

चुका है , अब उपन्यास के आधार पर उसके परिवेश का चित्रण हम करेंगे ।

उपन्यास के प्रारंभ में ही कहा गया है : " जिन दरवाजों से आज आपको ले जाया जा रहा है , ये वे दरवाजे हैं शहर के जो खुलते ही उस दुनिया में ले जाते हैं जिसके होने एवं जीवित रहने के विधान — वे नहीं हैं जो आप अपने घरों में देखते-सुनते हैं या अपनी पुस्तकों में पढ़ते हैं । सभ्यता के अनुशासन से परे , इस दुनिया के विधान दूसरे हैं , जीने की शर्तें अलग हैं । ... यहां जीवन के कुरूप से कुरूप एवं भयंकर से भयंकर नग्न रूप मिल जाएंगे क्योंकि यहां संस्कृति , मर्यादा एवं परंपराओं का कोई डर नहीं है । बन्धन नहीं है । इस रूप के बाजार का रूपविहीन जीवन अपने चरम रूप में आपके समक्ष खुलते थान की तरह बेशर्मी से खुला हुआ है । इन सभी लालबत्ती इलाकों में सबसे प्राचीन , सबसे स्थापित , बदनाम , खासी आबादीवाला , इतिहास और विरासत वाला इलाका है सोनागाछी ।" 57

क्या कुछ इस तरह के ही शब्द नहीं प्रयुक्त किए हैं जैनेन्द्र ने सत्तर वर्ष पहले त्यागपत्र में ? — " यहां किसीको यह कहने का लोभ नहीं है कि वह सच्चरित्र है । यहां सच्चरित्रता के अर्थ में मानव का मूल्य नहीं माना जाता । दुर्जनता ही मानो कीमत है । यहां छल असंभव है , जो छल कि शिष्ट समाज में जरूरी ही है । यहां तहजीब की मांग नहीं है , सभ्यता की आशा नहीं है । बेहयाई जितनी उघड़ी सामने आये उतनी ही रसीली बनती है । ... मनुष्य यहां खुलकर सगर्व पशु हो सकता है । ... यहां कंचन की मांग नहीं है , पीतल से परहेज नहीं हैं । ... बल्कि यहां पीतल का ही मूल्य है । इससे सोने के धैर्य की यहां परीक्षा होगी ।" 58 और इस परिवेश की बेहयाई का एक नमूना देखिए :

" सर , सुनिए तो , अबकी — बहुत वेरायटी है । आगरा-वाली , नेपाली , बंगाली और सर मोहम्डन भी है , खालिस मुसल्ली .... कसम से सर , अरे झूठ क्यों बोलूंगा , सर , और झूठ बोल

भी हूं तो भी क्या, सोलह साल की कुड़ी तो जवान होनी ही है।

" क्या कहा ... ? मोहम्डन भी है, तब तो हम जरूर जाएंगे ... उसे पवित्र करने। यही तो जीत होगी हमारे ब्राह्मणत्व की।" 59

और किस तरह की और किस तरह की ये सोनागाछी की वेश्याएं हैं, उसका एक चित्र देखिए : " अंधेरे और उम्मीद के संधिस्थल पर। अपने स्वाभिमान के विरुद्ध। अपने खिलाफ़। किसी दूसरी देह का इन्तजार करती। उबकाई और उदास। लिपी-पुती देह। आंखों में भविष्यहीनता। चेहरे पर सस्ता और भड़कीला मेकअप। ईम्रx रंगे होंठ। सस्ती चमक के आभूषण। चटक और सस्ती क्रि किस्म की पोशाकें। प्लास्टिक की चप्पलें। कहीं चमड़े की भी। प्रतीक्षा के लाखों कल्प। अठारह से लेकर चालीस-बयालीस की उम्र की लगभग सभी वारांगनाएं। तरह-तरह की — बंगाली, नेपाली और आगरावाली। एक नज़र में न हुस्न के जलवे। न अदाओं का जादू। न कला। न श्रृंगार। x×हस्xx न साज, न आवाज। सिर्फ देह, मादा देह।" 60

और ग्राहक कैसे होते हैं उसका भी एक रेखाचित्र देखिए : " सभी तरह के ग्राहक इन गलियों में — नाकवाले, बिना नाकवाले। टायर्ड-रिटायर्ड। पत्नीवाले, बिना पत्नी वाले। लुक-छिपकर आनेवाले। खुलेआम आने वाले। ट्रक ड्रायवर, ढाबावाले, गुटिया, मजदूर एवं रिक्शा चालक। जो अपनी हडकम्पवाली जिन्दगी में कुछ क्षणों के लिए हवा भरने चले आते। ऊबे हुए रईस एवं शिथिल पड़ी इन्द्रियोंवाले, जिन्दगी से थके अधेड़ भी अपनी अर्थहीन, खोखली एवं नीरस जिन्दगी में "मजा तत्व" की लालसा लिए चले आते। दो घड़ी के लिए गम-गलत करने की आशा में आते असाध्य रोगों से ग्रस्त बूढ़े, एवं बड़ी उम्र तक अविवाxxहित रहने वाले अविवाहित भी। एकदम नये नवेले ... पहली बार स्त्री संसर्ग का जायका

लेनेवाले भी । ... यदि ग्राहक एकदम नवागन्तुक नहीं है एवं इन गलियों का अनुभव-सिद्ध विजिटर है और यदि वह शार्ट रेट पर आया है तो कमरे में घुसते ही वह फटाफट प्रेम-प्रकरण के "डाइरेक्ट एक्शन " पर आ जाता है । और यदि वह लॉंग रेट पर है तो "डाईरेक्ट ऐक्शन" से पूर्व कुछ "मंगलाचरण " , कुछ नाटकीय भावुकता का ×××× " छौंक " ... फिर " टेक आफ " उतनी बार जितनी संख्या बाहर तय हुई थी ।" 61

इन वेश्याओं का निवास , उनके कमरे किस प्रकार के होते हैं , यह भी उनके परिवेश का एक अंग है , अतः उसका एक चित्र देखिए : " इन गलियों में लगभग हर कमरे बदबूदार , अँधेरे , चूना झड़ती दीवारोंवाले , जंग खाए जंगलोंवाले एवं टूटे फर्शवाले हैं । हर कमरे में एक ऊँचा-सा , कहीं-कहीं ईंटों के सहारे ऊंचा कर दिया गया एक सिंगल बेडनुमा तखता है जिस पर पतला-सा बिस्तर है, जिस पर पतली-सी मैली-सी एवं पूर्व-ग्राहक के पसीने से अटी पड़ी फुलालेन या कोई छींटदार चद्दर है । पांवों की तरफ तह किया हुआ सस्ता मैला कम्बल है । मैल और तेल से अटे पड़े गिलाफवाला, कहीं-कहीं बिना गिलाफवाला , एकदम कम रूई का कड़ा-सा तकिया है । जंगलों पर वेश्या या आनेवाले ग्राहकों की इज्जत पर पर्दा डालने केलिए डोरी से लटके , धूल से अटे गन्दे काले पर्दे हैं । अमूमन हर दीवारों पर देवी-देवताओं के चित्र हैं — कहीं कैलेण्डर में तो कहीं फ्रेम में । किसी-किसी दीवार पर श्रृंगार का प्रतीक एक छोटा-सा आईना है । कमरे के बीच या कहीं-कहीं कोने पर तिरछी बंधी एक प्लास्टिक की डोरी है जिस पर लटकी कई पोशाकें हैं । कमरे की ज़मीन पर बिछी आधी गृहस्थी है — स्टोव है , स्टील एवं अल्यूमिनियम के बर्तन हैं । मसालों केडिब्बे हैं । ×××× शीशियों में चमकता कड़ुवा तेल है । कहीं-कहीं कमरे के कोने में रखी पानी से भरी प्लास्टिक की बाल्टी है । ... बची हुई आधी गृहस्थी तखतेनुमा पलंग के नीचे या कमरे में रखी कोई रैक

या दीवारों पर बने आलयों में सिमटी हुई है । लगभग यही नजारा और साज-सज्जा है हरेक ऐसे बेरूह कमरों की । xxxxxxxx स्वर्ण से भी महंगी जगह इन इलाकों की । इस कारण प्रायः हर कमरा किसी कबूतर के दड़बे-सा ।" 62 शायद इसलिए ही मटियानीजी ने अपने एक उपन्यास का नाम "कबूतरखाना" रखा है ।

उपन्यास में शार्ट-रेट वाले गरीब, झाकावाले, मुटिया, ठेलेवाले, टेक्सी-ड्राइवर टाइप के ग्राहकों और लोंगरेट के कुछ अमीर ग्राहकों के संदर्भ में भी xxxxxxxxxx" बताया है । देखिए इस संदर्भ में गायत्री नामक वेश्या का कथन जो एक फ्लाइंग वेश्या है — "शुरू-शुरू में तो खड़े-खड़े कमर टूट जाती थी । गोड़ पिराने लगता था । अन्दर घाव हो जाते थे, खुजली होने लगती थी । लेकिन बाकी वेश्याओं की तरह थकान मिटाने को मै दारू नहीं लेती ... हां, मेरे ग्राहक दारू पीते हैं, कई लेकर आते हैं, कई यहां आकर खरीदते हैं । कई-कई ग्राहक, विशेषकर शोर्ट रेटवाले तो ऐसी दुर्गन्ध मारते हैं कि माथा भन्ना जाता है । उबकाई आने xxxx लगती है । नहीं, शराब की नहीं, पसीने की दुर्गन्ध, साले सप्ताह में एक बार तो साबुन से नहाते हैं । शराब की गन्ध भी शुरू में तो एकदम नहीं सह पाती थी । मितली आने लगती थी ।" 63

इस पर उपन्यास की नायिका सुकीर्ति पूछ बैठती है — " और लोंग रेट के ग्राहक ? " उत्तर में गायत्री कहती है — " वेथोड़े ठीक होते हैं, लेकिन बातें बहुत उल-जूलूल करते हैं । अजीब-अजीब हरकत करते हैं । कई चाहते हैं कि हम xxxx उनका सिर गोद में रखकर प्रेमिका या जोरू की तरह सहलाएं । कई साले तो ऐसी हमदर्दी दिखाएंगे कि जैसे अभी ही सात फेरे खा लेंगे । दरअसल लोंग रेट के गिराहक थोड़े रसिया, थोड़े अमीर होते हैं । चाहते हैं कि भरपूर मजा मिले । तन को भी, मन को भी । ... बस उसी चक्कर में तमाम बकवास करेंगे ... मेरी सोना, मेरी रूपा, मेरी चनरमुखी ...

मेरी बुलबुल तोमाके देखे खुब कष्ट होच्छे ... जाबी आमार संगे, आमार रोजगार खुब भालो (तुमको देखकर बड़ा कष्ट होता है। मेरा धन्धा अच्छा है, चलोगी मेरे साथ ? ... और एकटा कथा जे कि प्रत्येक देर ग्राहकेर मुखे थोक, तोर कि स्वामी छीलो, कबे थेके तुमि एई पथे ? (और एक बात जो कि प्रत्येक ग्राहक के मुंह पर रहती है, तुम्हारा भी क्या कोई पति था ? कबसे तुम इस रास्ते पर ? (... इन हरामजादों के कलेजों को इस बात से ठण्डक पहुंचती है कि हमारे सिर पर किसीका हाथ नहीं, माथे में सिन्दूर नहीं, कइयों को तो जैसे सिन्दूर देखकर ही डंक मार जाता है ... पिछले सप्ताह ही एक एकदम पहली ~~xxxx~~ – पहली बार आया था। पूरा गांडू बाहर घबराहट में शायद ध्यान नहीं गया था उसका, भीतर ~~xxxxxx~~ इत्मीनान से जब शुरू करने लगा तो माथे के सिन्दूर को देखकर जनेऊ फड़फड़ाने लगा, साले का चेहरा चूतिए की तरह बन गया, कहने लगा, सिन्दूर को देखकर लगता है जैसे कुछ गलत कर रहा हूं।" 64

गायत्री इन ग्राहकों की मानसिकता, या मानसिक-रुग्णता पर भी प्रकाश डालती है। वह सुकीर्ति को कहती है: "अब जैसे कि मैं इस लाइन में धोखे से नहीं लाई गई हूं, मैं स्वयं सोच-समझकर और जानते-बूझते आई हूं, पर यदि मैं ऐसा कह दूं कि मैं यहां अपनी इच्छा से हूं तो उनका मिजाज बिगड़ जाएगा, मस्ती चली जाएगी उनकी। दरअसल खुद साले कितने भी गिरे क्यों न हों, जगह-जगह की जूठन चाटे हों, पर चाहेंगे कि लड़की मिले तो कुंवारी कन्या या फिर सती-सावित्री। साले वेश्याओं तक से उम्मीद रखते हैं कि हम उन क्षणों में लजाएं। उनके पुरुषार्थ का लोहा मान लें। साले पूरे के पूरे गधे होते हैं, मैन ... कइयों को अच्छा लगता है — हमारा चीखना, सिसकारी भरना, होंठ काटना, नोचना ... अरे पूरी अजायबघर है यह दुनिया। रकम-रकम के लोग हैं यहां। कई साले ऐसे होते हैं जो बारी-बारी से सबका स्वाद

लेंगे । जबकि कई ऐसे भी होते हैं कि जो मेरे पास आएगा तो मेरे ही पास आएगा । मैं उस समय यदि कमरे के भीतर भी रहूं तो प्रतीक्षा करेगा ... लेकिन दूसरी के पास हर्गिज नहीं जाएगा । बड़ा मजाक बनता है ऐसे गिराहक को लेकर । महुआ तो हमेशा मजाक करती थी , जा , आ गया तेरा बांधा गोभी । एक ऐसा ही गिराहक बहुत दिनों तक कहता रहा , शादी कर घर बसाने की बात । अब नई से नई आई लाइनवाली भी इन झांसों में नहीं आती । यहां से जो इक्की-दुक्की गई भी तो उससे बदतर हालत में लौटीं । " 65

गायत्री बूढ़े ग्राहकों के संदर्भ में सुकीर्ति को बताती है — "जानती हैं मुझे सबसे अधिक परेशानी होती है बूढ़े गिराहकों से ... मरजाने आ मरेंगे , कुछ करने में गूदा निकलने लगेगा , तो बकवास पर उतर आएंगे ... अजीब-अजीब मांग करेंगे । वक्ष पर हाथ फेरते रहेंगे ... एक ऐसा बुढ़ऊ आता था । दादू । हाथ-पैर कीर्तन करते सूअर के बच्चे के । माथा चाट जाता था ... चूमता जाता और पूछता जाता 'केमन लाग छे ... केमन लागछे ... { कैसा लगता है , कैसा लगता है । } एक और दादू , सिर चिकने तवे की तरह सफाचट । एक भी बाल नहीं । चेहरे की खोल झूलती हुई । हांफते-हांफते बैठ जाता और कहता , 'कपड़े उतारकर नाच । " 66

प्रस्तुत उपन्यास में "संलाप" की स्थापिका इन्द्राणी दी के संदर्भ में जो बात आयी है , वहां नीदरलैण्ड के एम्सटर्डम के संदर्भ में कुछ विवरण उपलब्ध होता है । दुनिया का सबसे बड़ा स्थापित लालबत्ती इलाका एम्सटर्डम में है । यहां वेश्याओं की तादाद सबसे ज्यादा है । वेश्यावृत्ति को यहां कानूनी मान्यता मिली हुई है । व्यवसाय करने के लिए यहां प्रत्येक वेश्या को उसका लाइसेंस लेना पड़ता है । अठारह से कम उम्र की लड़की को

यहां वेश्यावृत्ति का लाइसेंस ही नहीं मिलता है । अतः बाल-वेश्या की समस्या नहीं है । फलतः तुलसी जैसी भयानक स्थिति यहां किसी भी वेश्या की नहीं हो सकती । तुलसी नामक एक तेरह वर्षीय मुंबई केxजेxजेxxअस्पतालxमेंxx नेपाली वेश्याx वेश्या मुंबई के जे. जे. अस्पताल में तीन-तीन गुप्त रोगों की शिकार पाई गई थी । महज तेरह साल की अवस्था में ही उसका शरीर घिनौना हो चुका था । उस लड़की को नेपाल से भगाकर मुंबई के एक चकले में बेच दी गई थी । दसवें दशक में इस मसले को इण्टरनेशनल हेल्थ आर्गेनाइजेशन ने संयुक्त राष्ट्र में भी उठाया था कि नेपाल और बांग्ला देश की लड़कियां भारत में और भारत की लड़कियां मिडिल ईस्ट तथा यूरोप में बेची जा रही थीं । बहरहाल मुद्दे की बात यह है कि एम्सटर्डम में जो होता है वह खुलेआम होता है, कानूनी तौर पर होता है । यहां की वेश्याओं के स्वास्थ्य का भी खूब ध्यान रखा जाता है । हर पखवारे उनका मेडिकल परीक्षण होता है और हर महीने एस. टी. डी. टेस्ट होता है । यहां के चकलाघरों में सिर्फ ग्राहक ही घुस सकते हैं । कई जगहों पर तो ग्राहक को भी क्लोज सर्किट द्वारा चकला-घरों के मैनेजर देखते हैं और काफी जांच-पड़ताल के बाद ही ग्राहक को अन्दर जाने दिया जाता है । एम्सटर्डम की बात यहां इसलिए उल्लेखनीय हो जाती है कि वहां के चकलाघरों का परिवेश हमारे यहां की तुलना में काफी अच्छा होता है । [67]

उपन्यास में सोनागाछी की पिन्की नामक एक कमरेवाली वेश्या का विवरण भी प्राप्त होता है । पूर्ववर्ती पृष्ठों में निरूपित किया गया है कि वेश्याx "कमरेवाली" वेश्या उसको कहा जाता है जिसका अपना कमरा होता है । प्रायः ऐसी वेश्याओं को यह व्यवसाय विरासत में मिलता है । यहां विरासत मातृ-प्रधान होती है । पिन्की की मां भी वेश्या थी । फलतः पिन्की को न अपने व्यवसाय से नफ़रत है, न ग्राहक से, न ही नसीब से कोई गिला-शिक्वा । वह एक बिन्दास्त किस्म की वेश्या है । उसकी

मां के समय में कभी वहां मुजरा भी हुआ करता था और नृत्य , तबला और सारंगी की दुनिया भी वहां आबाद थी । तबकि अधिकांश वेश्याएं नचनियां-बजनियां भी रहा करती थी । अब तो केवल जिस्म-फरोशी रह गई है । पिन्की के कमरे के परिवेश पर दृष्टिपात कर लें : " अधिकांश वेश्याओं को ऊंचे भाड़े पर एक दिन या रात के हिसाब से कमरा लेना पड़ता था , वहीं उसके पास (पिन्की के पास) खुद का एक कमरा था अपने कर्ममय जीवन की नौका खेने के लिए । करीब सौ स्क्वायर फीट का एक ऊंचा सीलन-भरा , झड़ती दीवारोंवाला एक अन्धेरा बन्द-बन्द सा कमरा । उसी एक कमरे की मल्कियत और अपने जिस्म के तख्ते-ताउस पर बैठी पिन्की को यहां आने वाले ग्राहक भी भले लगते हैं । ... ऊंचा तख्ते-नुमा पलंग । उस पर पसीने की बदबू से गन्धाती पतली और मैली चादर में लिपटा बिस्तर ; गन्दा काला कम्बल । बिन गिलाफ के चकते से भरे दो कड़े-कड़े तकिए । धूल से अटे जंगले और उस पर लटकते पतले , मैल से तकरीबन काले हो गए पर्दे । ऊंचे पलंग के नीचे पिन्की की सिमटी गृहस्थी का पूरा ताम-झाम । झाड़-झंखाड़ । काठ-कबाड़ा सभी कुछ । स्टील और अल्युमिनियम के मिले-जुले बर्तन । कोने में प्लास्टिक की पानी-भरी बाल्टी । स्टोव । कुछ डिब्बे । सिल-बट्टा । कुछ शीशियां । कमरे के बीच लटकती एक प्लास्टिक की डोरी , उस पर झूलतीं कुछ पोशाकें । कुछ सस्ते सिल्क की चमकीली, कुछ सूती । दीवार पर टंगा एक आईना । एक कोने में रात की बुझी कछुआ छाप अगरबत्ती । एक हाथ की पंखी । आईने के नीचे एक रैक । उस पर श्रृंगार के कुछ प्रसाधन । सनसिल्क शैम्पू की शीशी । सस्ते ब्राण्ड की लिपस्टिक , पावडर । पलंग के दाईं ओर लकड़ी की एक अति प्राचीन अलमारी जिसका शीशा इतना दागदार हो चुका था कि उसमें कुछ भी देखा नहीं जा सकता था । कमरे के कोने में जमीन से छः इंच ऊंची सीमेंट की पाटी । उसी पाटी के अन्दर एक अधमरा-सा बहता नल । वहीं कुछ जूठे बर्तन । प्लास्टिक के गमले से बाहर झांकते हुए । एक कपड़ा पीटने की मोंगरी । ... और वेश्याओं के

के सभी कमरों की तरह इस कमरे में भी ढेरों देवी-देवताओं की तस्वीरों के पुराने कैलेण्डर एक लाइन में, यह भारतीय सत्य दर्शाते हुए कि इस देश में घर चाहे वेश्या का हो या कसाई का या कुबेरपति का, मनुष्य कहीं भी अकेला नहीं रहता, वह देवी-देवताओं के साथ, पशु-पक्षियों के साथ एवं घर के बाहर लटकते पिंजरे में बन्द तोता-मैना के साथ भी वास करता है। .... कि जीवन जैसा भी हो आज भी हमारे समाज की मूल चेतना आध्यात्मिक ही है।" 68

ऐसा नहीं है कि इन लालबत्ती विस्तारों में सिर्फ वेश्याएं ही रहती हैं। इनके बीच दूसरे सामान्य प्रकार के लोग भी रहते हैं। इस संदर्भ में उपन्यास में एक स्थान पर आया है — "दो महिलाएं उस कुएं से जल खींच रही थीं। गोल बैंगन से चेहरेवाली एक महिला ने देह की असीमता और यौवन को सिर्फ पेटीकोट से ही ढंकने का प्रयास किया था। पेटीकोट को ऊपर तक चढ़ाकर पेटीकोट की डोर को गर्दन से थोड़ा नीचे बाँधकर। दूसरी आम महिला जैसी थी। शर्तिया ये सिर्फ पेटीकोटवाली महिला लाइन में काम करने वाली है और दूसरी गृहस्थिन। ... आजकल इन गलियों में घूमते हुए सुकीर्ति (उपन्यास की नायिका और लेखिका की स्पोक-परसन) महिलाओं की साजसज्जा एवं हावभाव को देखकर ही समझ जाती थी कि कौन क्या है। प्रायः सभी लालबत्ती इलाकों की गलियों में वेश्याओं के समुद्र के बीच-बीच द्वीपों की तरह गृहस्थिनियां भी रहती हैं, अधिकांश मध्यवर्ग की।" 69

ऐसी बदनाम बस्तियों में रहना उनकी मजबूरी है, पर और कहीं जा नहीं सकते। "पतझर की आवाजें" (निरूपमा सेवती) की नायिका अनुभा की सगाई इसलिए तो टूट जाती है कि उसका परिवार जिस मकान में रहता है, उसके ऊपरी तल्ले पर वेश्याओं का एक चकला था। अनुभा का मंगेतर रमनेश अनुभा से कहता है कि मेरे मित्र हंसते हैं कि तुम्हारी फियान्सी कैसी जगह पर रहती है और

अन्ततः इसी कारण वह सम्बन्ध टूट जाता है । [70] इन विस्तारों में कहीं-कहीं तो नीचे के तल्ले पर दुकानें होती हैं और उनके ऊपर चकले होते हैं ।

वेश्याओं के परिवेश से जुड़ा एक और सत्य है — वेश्याओं के बाबुओं का । महानगरों में रहने की समस्या बड़ी विकट होती है । अतः कई लोग केवल इस समस्या से निबटने के लिए ही "बाबू" हो जाते हैं । बाबू वेश्याओं के प्रेमी या पति को कहते हैं । बिना विवाह के भी ये वेश्याएं इनके नाम के सिन्दूर से अपनी मांग सजाती सजाती हैं । ये बाबू प्रायः टेक्सी ड्राइवर, ट्रक ड्रायवर, बस ड्राइवर, रिक्शा चालक, राज मिस्त्री, दीवारों पर पोस्टर चिपकाने वाले लोगों में से होते हैं । यहां वेश्या के पास इन्हें शहर में रहने का ठौर और पत्नी की-सी देखभाल मिल जाती है । साथ-साथ रहने से उन दोनों में धीरे-धीरे पति-पत्नी के-से भाव जाग्रत हो जाते हैं । [71]

वेश्याएं या तो लालबत्ती विस्तारों में रहती हैं या महानगरों की झोंपड़पट्टियों में । नगरीकरण के कारण अनेक प्रकार की समस्याओं का निर्माण हो रहा है । सम्प्रति महेश वी. जोशी के नियमित कालम " अर्थकारण नी आरपार " में बताया गया है कि 2001 ई. की जन-गणना के अनुसार दश लाख से ज्यादा आबादी वाले शहरों में कम-से-कम 1,69,000 लोग गन्दी बस्तियों में रहते हैं । मुंबई के 58 लाख लोग गंदी झोंपड़पट्टियों में रहते हैं । दुनिया की सबसे बड़ी झोंपड़पट्टी "धारावी" मुंबई में है । इस प्रकार मुंबई में उसकी कुल आबादी के 48.88 प्रतिशत लोग गंदी झोंपड़पट्टियों में रहते हैं । इसी तरह की स्थिति दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई आदि की है ; जहां क्रमशः 18.5 लाख, 14.9 लाख और 10.8 लाख लोग ऐसी बस्तियों में रहते हैं । [72] संक्षेप में कहा जा सकता है कि इनका रिहायशी परिवेश

निहायत गन्दा , घिनौना और बीभत्स होता है ।

﴾ग﴿ वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त भाषा :

उपन्यास में भाषा तत्त्व का महत्त्व अपरिहार्य है । यथार्थ-धर्मिता उपन्यास का प्राण-तत्त्व है । कथावस्तु , चरित्र , कथोपकथन, परिवेश , विचार इन सभी का निर्वाह यथार्थ ढंग से होना चाहिए । और उसमें भाषा एक माध्यम या हथियार का काम करती है । वैसे तो साहित्य के सभी रूपों में भाषा की विशेष दरकार रहती है , तथापि उपन्यास में भाषा की यथार्थता पर विशेष जोर दिया जाता है । उपन्यास में भाषा कथावस्तु के अनुरूप होगी । कथावस्तु समसामयिक होगी , तो भाषा भी उसी प्रकार की रहेगी , कथावस्तु यदि ऐतिहासिक हुई तो भाषा का रूप इतिहास के उस काल-खण्ड के अनुरूप होगा जिसका आलेखन उसमें किया गया है । चरित्र-निर्माण में भी भाषा के योगदान को कोई नकार नहीं सकता । जिस प्रकार का चरित्र होगा , भाषा भी उसीके अनुरूप और उसी स्तर की होगी । कथोपकथन या संवाद में प्रयुक्त भाषा चरित्र के अनुरूप रहेगी । परिवेश या वातावरण का निर्माण ही भाषा द्वारा होता है । जिस प्रकार का परिवेश होगा — ग्रामीण , नगरीय , समसामयिक , ऐतिहासिक , पौराणिक — भाषा का रूप भी उसके अनुसार ही रहेगा । विचार का वहन भी भाषा द्वारा ही होता है । मतलब कि उपन्यास के सभी तत्त्वों के यथार्थ निरूपण के लिए लेखक को भाषा के पास जाना ही पड़ता है । उपन्यास को परिभाषित करते हुए राल्फ फोक्स महोदय ने एक बात को रेखांकित किया है — " इट इज़ ए प्रोज आफ मैनx मेन्स लाईफ sx " अर्थात् वह ﴾ उपन्यास ﴿ मानव-जीवन का गद्य है ।" मानव-जीवन का गद्य " कहने के पीछे उनका अभिप्राय यह है कि उपन्यास में भाषा वही रहेगी , जो लोगों की भाषा है , मतलब कि उपन्यास में जिन लोगों का चित्रण हुआ है , उनकी भाषा वहां प्रयुक्त होगी । दूसरे शब्दों में कहें तो मानक-भाषा नहीं , परन्तु बोलचाल की भाषा ﴾ स्पोकन-

लैंग्वेज़ ई का प्रयोग उपन्यास में अधिकांशतः होता है । वर्णन , विवेचन और विश्लेषण में लेखकीय भाषा का प्रयोग चलता है ; किन्तु पात्रों के कथोपकथनों में तो उनकी ही भाषा , बल्कि बोली , का प्रयोग होता है ।

वैसे वेश्याओं की अनेक कोटियां हमने निर्धारित की हैं , तो वेश्याओं की भाषा भी उस श्रेणी-विभाजन के अनुरूप रहेगी । किन्तु मोटे तौर पर समसामयिक वेश्या-समा ज को हमने तीन वर्गों में रखा है — 1. उच्चवर्गीय समाज की वेश्याएं , 2. मध्यवर्गीय समाज की वेश्याएं और 3. निम्नवर्गीय समाज की वेश्याएं । उच्च-वर्गीय वेश्याओं में कालगर्ल , सोसायटी-गर्ल , तीन-तारक या पंच-तारक होटल में जानेवाली वेश्याओं का समावेश होता है । उनकी भाषा भी उनके अनुरूप होती है । अंग्रेजी वाक्यों और शब्दों का प्रयोग उनमें बहुतायत से मिलता है । मध्यवर्गीय वेश्याओं की भाषा सामान्यतया मध्यवर्गीय लोगों की बोलचाल की भाषा होती है । निम्नवर्गीय वेश्याओं की भाषा निम्नवर्ग के लोगों से सम्बद्ध होती है । उसमें गाली-गलौज तथा अश्लील शब्दावली का प्रयोग भी शामिल है । अतः "वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त भाषा " की चर्चा करने के लिए हम अध्ययन की सुविधा हेतु उसे निम्नलिखित चार शीर्षकों में विभक्त करना चाहेंगे — ई्यई सामान्य भाषा या लेखकीय भाषा , ईरई कोलकाता , विशेषतः सोनागाछी की वेश्याओं की भाषा , ईलई मुंबई की झोंपडपट्टी की वेश्याओं की भाषा और ईवई वेश्या-समाज के कुछ पारिभाषिक शब्द । अब क्रमशः हम इनकी चर्चा करेंगे ।

ई्यई सामान्य भाषा या लेखकीय भाषा :

पूर्व-प्रेमचंदकाल या प्रेमचंदकाल के लेखकों ने जहां-जहां वेश्याओं का चित्रण किया है , वहां वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त भाषा प्रायः आम-फहम की भाषा रही है । लेखकीय भाषा और उस भाषा में बहुत ज्यादा अंतर नहीं पाया जाता । ज्यादातर लेखकों ने इस

बात का ध्यान रखा है कि वेश्या यदि हिन्दू है तो उसकी शब्दावली में अधिक उर्दू शब्द नहीं मिलते । और वेश्या यदि मुस्लिम है, तो उसकी शब्दावली में उर्दू शब्दों का धड़ल्लेसे प्रयोग हुआ है । हां, कुछेक सामान्य गालियों का प्रयोग उनमें मिलता है, जैसे -- हरामजादा, हरामजादी, हलकट, रांड, कुलटा, साला, साली, भड़वा, दल्ला, हिजड़ा, नामरद, चूतिया आदि-आदि ।

अब कुछेक उदाहरणों द्वारा इसे प्रमाणित किया जायेगा । किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यास " स्वर्गीय कुसुम " की कुसुम एक देवदासी है । एक स्थान पर वह कहती है -- " यह देवदासी-प्रथा व्यभिचार और वेश्यावृत्ति की जड़ है और इसे किसी व्यभिचारी महात्मा ने ही चलाया है । ... गृहस्थाश्रम-त्यागियों के भोग-विलास के लिए जब स्त्रियों की आवश्यकता हुई, तथा परस्त्रीगमन और वेश्या-समागम की निन्दा होने लग गई, तब उन्होंने इस घृणित देवदासी-प्रथा की चाल चलाकर और भोले-भाले धर्मप्राण लोगों को ठगकर अपना काम चलाने का उपाय निकाला ।" [73] यहां कुसुम की जो भाषा है वह लेखक की भाषा से बिलकुल अलग नहीं है । वैसे उसका एक कारण यह भी है कि कुसुम अभिजात वर्ग से सम्बद्ध है ।

भगवतीचरण वर्मा कृत "तीन वर्ष " उपन्यास की वेश्या सरोज उपन्यास-नायक रमेश से एक स्थान पर कहती है : " मैं न जाने कितनी रोई हूं, न जाने कितनी तड़पी हूं । लेकिन जो कुछ भगवान ने दिया, वह लेना ही पड़ा । मैं सच कहती हूं कि मेरी मां भी बहुत दुःखी हुई थी । इस दुःख से वह घुल-घुल कर मर गई । लेकिन होता क्या है ? धीरे-धीरे मैं इसकी आदी हो गई ।" [74] यहां भी सरोज की भाषा लगभग वही है जो लेखक की भाषा है और जो पूरे उपन्यास में प्रयुक्त हुई है ।

विश्वम्भरनाथ शर्मा "कौशिक" के उपन्यास "मां" की वेश्या का नाम बन्दी है । बन्दी की मां भी वेश्या है । यहां उन दोनों

की भाषा के उदाहरण प्रस्तुत है — " या अल्लाह , जब से आपको चौक में घूमते देखा , तब से मछली की तरह तड़पती फिरती रही । कई बार कहा — आज अभी तक नहीं आये , क्या न आवेंगे । और मैं कहती थी आवेंगे जरूर । आखिर वही हुआ । { बिन्दी की माँ का कथन }"[75] अब जरा बिन्दी का कथन भी देख लीजिए —" भई , हम अपनी आदत का क्या करें । हमारी तो जिससे मुहब्बत होती है , उसीसे बातचीत करने को जी चाहता है । यों हमसे हंसा नहीं जाता , चाहे कोई लखपति हो या करोड़पति । हम तो मुहब्बत के भूखे हैं , रुपये के भूखे नहीं । रूपया लेकर हम क्या करें ? जिस खुदा ने पैदा किया है , वह शाम तक खाने को दे ही देगा ।"[76] यहां पर ये दोनों वेश्याएं मुस्लिम है , लिहाजा उनकी भाषा में कुछ उर्दू लब्ज़ और लहजा है । भाषा में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है ।

तो रांगेय राघव कृत उपन्यास "घरोंदे" की वेश्या नादानी का यह कथन देखिए —" दुनिया की हर औरत हरेक आदमी को नहीं चाहती बाबूजी ... बरसात में गन्दी नालियों में बहते पानी को एक गड्ढे में जमा करना जरूरी हो जाता है , वैसे ही तुमने मुझे बना रखा है । तुमने मच्छरों की भन-भन सुनकर कदम दूर ही दूर रखा । कामेश्वर , तुम आजकल के पढ़े-लिखे आदमी हो , तुम , तुम भी मुझे नहीं उबार सकते ? बोलो ? जो तुम दोगे वही खाऊंगी , जो दोगे वही पहनूंगी , मगर यह नरक मुझे जीवित में ही मुर्दा किए हुए है , मुझे इससे बाहर ले चलो ... मैं विवाह नहीं चाहती । तुम मुझे रख लो ।"[77]

इलाचन्द्र जोशी दारा प्रणीत उपन्यास " प्रेत और छाया" की नंदिनी उपन्यास के नायक पारसनाथ को कहती है —" तो क्या अभी तक तुम यही समझ बैठे थे कि समाज और पति के बंधन में बंधी हुई एक भले घर की बहू को फुसलाकर भगाये लिये जा रहे हो ? ठीक है , यही बात है । एक कुलीन घराने की विवाहिता स्त्री को

भगाकर उसका धर्म भ्रष्ट नष्ट करने में तुम जैसे अधम पुरुषों को जो सुख मिलता है वह किसी वेश्या-समाज की लड़की को (फिर चाहे वह विवाहिता ही क्यों न हो) भगाने में कहां मिल सकता है ?" 78 यहां भी वेश्या नंदिनी की भाषा लेखक इलाचन्द्र की भाषा से अलग नहीं है ।

उपर्युक्त उदाहरणों से यही फलित होता है कि पूर्व-प्रेमचंद काल तथा प्रेमचंद काल के लेखकों ने जहां-जहां वेश्याओं का चित्रण किया है, वहां-वहां उन वेश्याओं की भाषा जन-साधारण की भाषा या लेखक की भाषा से बहुत दूर नहीं जाती है ।

(२) कोलकाता — विशेषतः सोनागाछी की वेश्याओं की भाषा :

कोलकाता के सोनागाछी, बहुबाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिदिरपुर आदि लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं की जो भाषा है वह अधिकांशतः बंगला है । हमारा अध्ययन हिन्दी उपन्यासों को लेकर है । अतः हमने यहां मधु कांकरिया के उपन्यास "सलाम आखिरी" को ही अपना मुख्य आधार बनाया है । मधु कांकरिया ने प्रस्तुत उपन्यास की भूमिका "आत्मकथ्य" में उपन्यास में निरूपित वेश्याओं की भाषा के सन्दर्भ में कहा है —" दूसरी समस्या जो सामने आई वह थी इनकी भाषा को लेकर, कलकत्ता में प्रायः सभी वेश्याएं, कुछेक नेपाली एवं आगरावालियों को छोड़कर बंगालीभाषी हैं । अब इसे बंगला भाषा की समृद्धि कहा जाए, इस भूमि की तासीर कहा जाए याकि यहां के बंग-साहित्य की अन्तर्शक्ति का कमाल कहा जाए कि अशिक्षित होते हुए भी यहां के सब्जीवाले, घरों में काम करने वाली बाई, श्रमिक वगैरह भी आम हिन्दी भाषा से उच्च स्तर की भाषा बोलते हैं । वेश्याओं के लिए भी यही सत्य था । मुझे इनकी उच्च बंगाली को निम्न हिन्दी में रूपान्तरित करने की क्वायद करनी पड़ी, पर अन्ततः मुझसे यह

क्वायद सधी नहीं । इसी बिन्दु पर एक बार राजकमल प्रकाशन के संपादकीय विभाग ने भी एतराज जताया कि वेश्याएं इतनी अच्छी भाषा कैसे बोल सकती हैं ? पांडुलिपि लौटा दी गई ।" [79] पर बाद में उनको बात समझ में आई और अन्ततः उपन्यास वहां से सन् 2002 ई. में प्रकाशित हुआ ।

पूर्ववर्ती अध्यायों में अनेक स्थानों पर प्रस्तुत उपन्यास के गद्यांशों को अलग-अलग सन्दर्भों में उद्धृत किए गए हैं । प्रस्तुत अध्याय में भी "परिवेश" की चर्चा करते हुए कई बार इस उपन्यास को , उसके विविध अंशों को , उद्धृत किया गया है । तथापि यहां वेश्याओं की भाषा के समxxx सन्दर्भ में कुछेक उदाहरण प्रस्तुत हैं ।

सोनागाछी की अधिकांश गलियां दुर्गाचरण मित्रा स्ट्रीट , अविनाश कविराज स्ट्रीट , नीलमणि मित्र स्ट्रीट , इमाम बक्स लेन, मस्जिदबाड़ी स्ट्रीट आदि में वेश्याओं के चकले हैं । इनमें से एक अविनाश कविराज स्ट्रीट है जिसमें मीना मैडम का चकला है । उपन्यास की नायिका सुकीर्ति जब यहां पहुंचती है तब मीना मैडम के चकले की एक वेश्या जूली को लेकर कोई झगड़ा चल रहा था ! पिछली रात को एक चूहे-सी शक्लवाले मिनमिनाते ग्राहक ने जूली के साथ कुछ मन-मानी करना चाहा था । जूही के विरोध पर उसने जूही को एक तमाचा जड़ दिया था । बाद में उसने मालकिन से जूली की शिकायत भी की थी । मालकिन मीना ने उस ग्राहक को कुछ नहीं कहा था , बल्कि आंख मार-मार के याराना तबीयत से बतियाती रही थी । इस बात पर जूली मुंह फुलाकर बैठी हुई थी । पचास प्रतिशत मालकिन और पचास प्रतिशत मासी के भावयोग से मीना कभी उसे धमकाती तो कभी समझाने की कोशिश कर रही थी — " कैसी आवाफिरी तुम ! अभी नेई नेई होना ... आस्ते -आस्ते सब बूझोगी ! कोई भी गिराहक इस कदर ठण्डी-ठस मूरती से प्रेम नहीं करना चाहता ... पैसा देता है तो मजे के लिए ही ना ... खाली गोल-गोल

गुस्वा से बात नहीं बनती । ... थोड़ी-बहुत एक्x एक्टिंग तो इस लाइन में करनी ही पड़ती है ... सभी कोई करती हैं ... तुम भी कोई सीता-सावित्री तो हो नहीं । शुक्र मना कि तुझे चौड़ी नाक, मोटे होंठ और भौंड़ी छाती के बावजूद गिराहक मिल जाते हैं, उनकी कद्र कर । हाँ-हूं, उफ-उफ करते सिसकारी भी मारनी पड़ती है ... जिससे उसका पुरुषार्थ सहला रहे । अब गिराहकों का क्या है ... तुमखुश नहीं रखोगी तो दूसरी के पास चला जाएगा । अरे दुल्हन वही जो पियामन भाए — गिराहकों को रिझाने की फनकारी जिसे आ गई वही राज करती है, बाकी को देखती नहीं, बूढ़ी हो जाती हैं, रास्ते में खड़ी-खड़ी, पर फिक्स्ड ग्राहक नहीं बन पाते । अरे गू खाए तो हाथी का खाय । " [80] इस पर जूली फूट पड़ती है —" साला गिद्ध था ... गिद्ध, गिद्ध से भी बदतर । गिद्ध तो फिर भी मरे हुए का मांस नोंचता है, पर इसने तो जिन्दा मांस ही नोंच डाला, फिर भी मालकिन ने उसे कुछ नहीं कहा ।" [81] इतना कहकर वह फिर फफक पड़ती है । इसपर सहानुभूति वश रमा नामक वेश्या उसे मनाने-समझाने जाती है, तो उसे धकिया कर जूली कहती है —" दफा हो यहां से मालकिन की दुम हिलाती कुतिया ॥ छिनाल । जा के ... चाट उसकी ।" [82]

रमा खिसियाती हुई सुकीर्ति के पास आती है और xxxxxxxxxx तारीफों का उड़नखटोला उड़ाती हुई फिर से चालू हो जाती है —" बहुत अच्छी है अमारी मालकिन, खूब भाली। दूसरी मैडमों की तरह टुच्ची तो एकदम नहीं, पहले जिस चकले में मैं थी उसकी मालकिन तो पूरी "राक्छसी" थी — चोट्टी । सभी लड़कियां कांपती थी उस हरामिन से । अमें कभी भी किसी गिराहक से मेल-जोल तक नहीं बढ़ाने देती । मर्द की जाति का चाटना और काटना दोनों बुरा होता है । चकले से बाहर झांकने तक नहीं देती कि कहीं अम भाग खड़ी न हों ... अपने गांव में चिट्ठी तक बड़ी

मुश्किल से लिखवा पाती । हरामिन अमारे हगने-मूतने तक का हिसाब रखती ।" 83

आगे अपने मन का गुबार निकालने के लिए वह कहती है : " ये वाली मालकिन तो एकदम बूढ़ों और बच्चों को दफा कर देती है और वह तो ऐसी कमीनी लोभन थी कि बच्चों और बूढ़ों तक को नहीं बख्शती थी । हरामजादिन चुन-चुनकर सारे मर्द कलन्दरों को छांट देती अपनी चहेतियों के लिए और सारे बदसूरत, बदबूदार और बूढ़े ग्राहकों को भेज देती मेरे पास । कीड़े पड़ें उसकी देह को, खड़ूस, मां का ... ? मैं तो वहां मूतने भी न जाऊं । यहां तो फिर भी पुरानी पड़ने पर अम लोग कई बार किसी बेहद गन्दे या डरावने गिराहकों को देखकर मना कर देती हैं -- पर वहां तो सवाल ही नहीं उठता था ... मालकिन का यार था, पूरा जल्लाद, काले इंजन-सा चेहरा । दिन-भर बस एक ही काम था -- रंगबाजी झाड़ना । ज़रा-सी चूच्य की कि ढाई मन का पूरा पंजा मुंह पर । पुलिस तक ? भैन-... से मिली हुई थी ।" 84

सुकीर्ति से रमा बतिया रही थी, इतने में ही दो स्कूली बच्चे वहां आ धमके । रमा, कृष्णा, चम्पा सब हो-हो करके हंसने लगी । तभी रमा ने अपनी मालकिन की ओर आंख मटकाते हुए पूछा --" इनी जानते चान सेई दु टा छेले केनो एछ छीलो एखाने ? {ये जानना चाहती है कि ये दोनों स्कूली बच्चे यहां क्यों आये थे ? } तब मीना भौंहें चढ़ाते हुए कहती है --" यहां आए थे गिराहक बनकर । पाकेट में दोनों के बीस-बीस रूपये । शायद पाकेट-खर्च से बचाया गया होगा । मुंह से जैसे कच्चे दूध की गन्ध भी नहीं गई थी । मैंने पूछा, क्यों आए हो ? तो दोनों एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे । कुछ देर तक तो बोलती बन्द रही, फिर उनमें से एक ने हिम्मत कर मुश्किल से पूछा ... कितना लगेगा ? बाप रे, मैं तो तब समझी कि ये खुद ही ग्राहक बने बैठे हैं । दिमाग में था कि शायद अपने बाप-दादों

ढूंढने ही कहीं न आ पहुँचे हों । दूध के दांत टूटे नहीं , धोना आया नहीं और अभी से होने लगी औरत की तलब । मैंने डपट दिया , " जा भाग , तू तो बच्चा तोर एक्खोन कि काज ? " [जा भाग , तू तो बच्चा है , तेरा यहां क्या काम ?][85]

रमा सुकीर्ति को बताती है कि वेश्या में आने वाली लड़की में " ये कड़क होने चाहिए । " एक विशेष अंग की ओर इशारा करते हुए उसने कहा था । सुकीर्ति से कुछ खुलने पर रमा बताती है : " जानती हैं पिछली रात ही मैं पांच ग्राहकों को शार्ट रेट पर निबटा चुकी हूँ । उनमें से दो तो एकदम पहली बार ही आए थे । उन पांचों में से किसी एक के दिए दन्त-क्षत और नख-क्षत को वह उघाड़-उघाड़ कर अपनी साथी लाइनवाली को " मेरे जोबना का देखो हिलोर " वाली मुद्रा में दिखा रही थी । हैरान-सी सुकीर्ति पूछ बैठी थी , " लेकिन हर ग्राहक को बराबरी से संतुष्ट कर पाना तो सम्भव नहीं होता होगा तुम्हारे लिए , खासकर अंतिम ग्राहक को । " तब अपनी ही पीठ को ठोकने के अन्दाज में मुस्कुराते हुए रमा कहती है —" अरे , पटाना और ... मारना आना चाहिए । मेरे अधिकतर ग्राहक पंजाबी ड्राइवर हैं , हरेक के बस का नहीं है उन्हें खुश करना । एक बार मैं दूसरे ग्राहक के साथ थी तो मालकिन ने मेरे ग्राहक को चम्पा के साथ भेज दिया , तो बुरी तरह से झिड़क दिया था उसने उसे ... तू तो मूर्ति की तरह पड़ी रहती है , थोड़ा फुदका भी कर । सारी मेहनत मैं ही करूं ? पैसा किस बात का लेती है , आगे से तुझे कभी नहीं बुलाएंगे ... मालकिन को भी साफ मना कर दिया उसने , यह ठण्डी ठीकरी नहीं चलेगी । हाँ , तो आप पूछ रही थीं कि मैं हरेक को कैसे संतुष्ट कर पाती हूँ , तो यूं समझ लीजिए कि — मान लो मुझे एक ही दिन में कई जगहों से खाने का न्यौता मिलता है , तो क्या करूंगी मैं ... मैं तो हर जगह थोड़ा-थोड़ा ही न खाऊंगी — अल्पो अल्पो । बस ऐसे ही होता है , हरेक ग्राहक को अपनी थोड़ी-थोड़ी देह परोस देती हूँ

और मजे की बात यह है कि हर गिराहक यही समझता है कि वही मेरा खासमखास है । मैं एक्टिंग भी कुछ इस प्रकार की करती हूं ... भईx भई आखिर यहां गिराहक आता भी क्यों है ? कुछ उफनता-उबलता पाने के लिए ही न । और कुछx सच्ची बात यही है कि शादी-शुदा मरदों में भी अधिकतर वो ही आते हैं जो औरत को या तो लात मारते हैं या लात खाते हैं । तो ऐसों का ही विशेष ध्यान रखना पड़ता है ।' [86]

मीनाबाई के चकले की वेश्या नलिनी प्रेम-वंचना का शिकार होकर वेश्या बनी थी । इस संदर्भ में वह सुकीर्ति को बताती है : ' तुम्हारे लिए ही तो यह सब कर रहा हूं , वरना गांव में मेरे पास क्या नहीं था , खैर , तुझे मैं थोड़े दिन के लिए अपनी मामी के यहां छोड़ देता हूं , बहुत ख्याल रखेगी वह तेरा ... ठीक यही शब्द थे उस भौंसड़ी के के , और वह मुझे बहूबाजार के किसी चकले में बेच गया हरामी । आज भी जब दिन के पहले ग्राहक के पास जाती हूं तो उसके नाम पर अपने उस पहले मर्द पर एक बार थूक अवश्य देती हूं । ' [87]

इसी उपन्यास की गायत्री एक फ्लाइंग वेश्या थी । एक बार एक ग्राहक पूरा पैसा देने से इन्कार कर रहा था , तब वह उसे बंगला भाषा की चुनी हुई हेवी-वेइट गालियां सुनाती है --' खानकीरे छेले , माएर खसम ... असल बाप का हो तो पैसा मारकर दिखा दे , यहां से अपना गुदा निकलवा के ही जाएगा ... मां , खानकीर छेले , पूरा आधा घण्टा नोच-नोच मजा लेता रहा । मार लार टपका-टपका कर गन्दा कर डाला , ऊपर से बोलता है मजा पेलाम ना ... वेश्यार छेले ।' [88] इस पर महुआ नामक दूसरी वेश्या बिहारी लोकोक्ति सुनाती है --' हुंह , खस्सी की जान जाए , खवैया को स्वाद नहीं ।' [89] इसीका हिन्दी रूपान्तर है -- "बकरा जान से गया , खानेवाले को स्वाद नहीं आया । "

इसी संदर्भ में सुकीर्ति से अपना रोते हुए गायत्री कहती है : " कि कोरबो ? क्या करूं ? ? ज्यों-ज्यों महंगाई बढ़ती जा रही है, लाइनवालियाँ बढ़ती जा रही हैं । ग्राहक भी अब उतने नहीं मिलते, आमदनी भी अब वैसी नहीं रही , पैसे देते फटती है सालों की तो मन मारकर जो कुछ वे दे दें, कई बार उसीमें राजी हो जाना पड़ता है । ... पर हम भी इतने कम पैसों में अपनी पूरी की पूरी देह नहीं सौंपते हैं । अब जब सामनेवाला टुच्चेपन पर आ जाता है तो हम भी क्या करें । वो कमीना तो हम हरामी । बीस रूपये में घर के भीतर तो ले जाती हैं पर साफ मना कर देती हैं, "जामा कापड़ खुलबो ना " ? कपड़ा नहीं उतारूंगी ? अरे, सारी बातें साफ-साफ तय करने पर भी तो हरामी की औलाद, आदमी की जात, भीतर जाते ही नीयत में बेईमानी आ जाती है । उस समय तो कह देते हैं दिए दिबो ? दे दूंगा ? और बाहर आते ही ना-नुच्च करने लगते हैं । मुकर जाते हैं । लॉग रेट के ग्राहक फिर भी थोड़े ठीक होते हैं, पर उनसे भी एक झगड़ा आम है ... साफ बात हो जाती है, एक बार कि दो बार ... उस पर भी मुकर जाते हैं । दो बार वाले कई बार टाइम बहुत ज्यादा लेते हैं, दूसरी बार उसके तैयार होने में कुछ टैम लग जाता है । मार झीक-झीक । बड़ी कुतिया चीज है यह लाइन ? ऐसे-ऐसे मरे आते हैं कि दो पैसा देकर सोचते हैं कि औरत नहीं हुई कोई खुदाई हो गई । बस खोदते जाओ, सबकुछ मिल जाएगा, प्रेम, शरीर, यारबाशा ।"90

गायत्री सुकीर्ति को दो टेक भाषा में कहती है —" आप इस दुनिया का भीतरी सत्य नहीं लिख पाएंगी, बहुत हुआ ऊपरी छिलका भर उतार लेंगी, अपनी खिड़की से दूसरों के आंगन में झांक भी लिया तो क्या, इस दुनिया का भीतरी नरक यदि आप जान भी गईं तो क्या वैसी भाषा लिख पाएंगी आप ? दे पाएंगी वैसे शर्मनाक ब्यौरे ... जिन्हें आप लिखने तक की हिम्मत नहीं कर

पाती हैं , वैसे वाकया हमारे साथ हररोज घटते हैं । ... क्या आप लिख पाएंगी कि उस दिन जो ग्राहक आया था उससे जो रेट तय हुआ था उसके अनुसार वह मेरा ऊपर का जामा नहीं खोल सकता था , जामा नहीं खोल सकता था का मतलब भी आप समझ जाइए ... साला , भौंसड़ी का बीस का नोट थमा रखा था उसमें उसे और क्या मिल सकता था ... बाहर तो राजी हो गया , पर भुक्खड़ लुच्चा भीतर जाकर भूखे भेड़िये की तरह टूट पड़ा , टुच्चेपन पर उतर आया , जबकि बीस रूपये सिर्फ पांच मिनट का रेट है , सिर्फ उसी असली काम के लिए ।" 91

तो एक स्थान पर पिन्की नामक वेश्या सुकीर्ति को कहती है : " एक बात पूछूं ... सुकीर्तिजी .. क्या आप पूरी तरह सती-सावित्तरी हैं ? कि आपने कभी अपने मरद के अलावा किसीको नहीं चाहा , न सही तन से पर मन से भी नहीं ? सुकीर्तिजी सच्ची बात तो यह है कि अपने मरद की आड़ में आप सबकुछ कर सकती हैं , इसलिए भले ही तन पवित्तर रहता हो , मन तो आपका भी कइयों में बंटा ही रहता है । हमारा तन चूंकि बंटा हुआ है , इसलिए मन से हम अपने बाबू कि प्रति ही सच्ची रहती हैं । बुरा न मानें तो हममें और आप में सिर्फ खुले और ढंके का ही फरक है । मेरी एक सहेली थी जो अपने अपनी सौतेली मां के जुल्म से दुखी होकर यहां आयी थी । वह मुझे बताती थी कि चूंकि उसके पिता वृद्ध अरेरx एवं बीमार थे , उसकी मां को संतुष्ट नहीं कर पाते थे , इस कारण उसकी मां बिना रांड हुए ही सांड हो गई थी , घर में भी यारों को पेटीकोट में घुसाए रखती और पिता-पुत्री बेबस उन्हें देखते रहते थे ।" 92

इस तरह के तो ढेरों उदाहरण मिल सकते हैं क्योंकि पूरा उपन्यास वेश्याओं के बारे में है । अतः कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए हैं , जो भाषा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं । ऐसे भाषागत कई उदा-

हरय अन्यत्र भी दिए गए हैं । इन सबके आधार पर हम निम्नलिखित तथ्यों तक पहुंच सकते हैं :—

/1/ प्रथमतः एक बात स्पष्ट कर दें कि सोनागाछी की ये वेश्याएं ज्यादातर बंगला भाषा में बोलती हैं । यहां लेखिका मधु-कांकरिया ने उसे निम्न स्तर की हिन्दी के रूप में रूपान्तरित करने का यत्न किया है, किन्तु बंगला भाषा के संस्कारों के कारण उन्हें अधिक सफलता मिली नहीं है ।

/2/ कुछेक शब्द हिन्दी की प्रकृति से थोड़े अलग हैं, जैसे — माथाफिरी (सिरफिरी), नेई-नेई (नयी-नयी), बुझोगी (समझोगी), गिराहक (ग्राहक), नुच्य (मना), सुच्ची (सच्ची), अम (हम) आदि-आदि ।

/3/ कहीं-कहीं बंगला शब्द-प्रयोग भी मिलते हैं, यथा — खुब भालो, छेले, एखाने, तोर, कि काज, अल्पो-अल्पो, खानकीर छेले, मारेर खसम, कि कोरबो, यारबाशा, वेश्यार छेले आदि-आदि ।

/4/ कहीं-कहीं गालियों का प्रयोग भी मिलता है, यथा — साला गिद्ध, कुतिया, छिनाल, हरामिन, राक्षसी, चोट्टी, देह में कीड़े पड़े, खड़ूस, उसकी मां का ..., भोंसड़ी के, हरामी, खानकीर छेले, वेश्यार छेले, मारेर खसम, फुखड़, लुच्चा, भूखा भेड़िया, बिना रांड के सांड होना, पेटीकोट में घुसाए रखना आदि-आदि । वस्तुतः "मुरदाघर" में मुंबई की झोंपड़पट्टी की वेश्याओं की जो भाषा है उसके सामने यह कुछ भी नहीं है । इस बात की स्वीकृति लेखिका ने "आत्मकथ्य" में की भी है ।

/5/ इसमें ऐसे कुछ शब्द-प्रयोग मिलते हैं जो वेश्या-परिवेश को उभारने में सहायक हैं, जैसे — गिराहक, ठण्डी-ठस औरत, एक्टिंग करना, उफ-उफ करना, सिसकारी मारना, गिराहकों

को रिझाने की फनकारी , फिक्स्ड ग्राहक , मर्द की जात , हगने-मूतने का भी हिसाब रखना , थोड़ी-थोड़ी देह को परोसना , ग्राहकों को पटाना , चकला , बहूबाजार , लाइनवालियां , शोर्ट रेट का ग्राहक , लोंग रेट का ग्राहक , कपड़ा उतारना , एक बार कि दो बार , औरत को खोदते जाना , यारबाश , पांच मिनट का रेट सिर्फ उस असली काम के लिए , पेटीकोट में घुसे रहना आदि-आदि ।

/6/ अनेक स्थानों पर बंगला भाषा के वाक्य या वाक्य-समूह मिलते हैं । भाषा के उदाहरणों में वे समाविष्ट ही हैं , अतः यहां उनकी पुनरावृत्ति अपेक्षित नहीं है ।

/7/ वेश्याओं की भाषा में अनेक साहजिक कहावतों का प्रयोग भी हुआ है , जैसे -- गू खाय तो हाथी का खाय , मार मार के भंगी बनाना , खस्सी की जान जाए और खवैया को स्वाद नहीं , ऊँट की समाई चूहे के बिल में नहीं होती , जुआरी घाटा तो बादशाह भी नहीं भर सकता , जपां जपां तां तंत राखती वेश्या हो गई बांझ , जैसा चेहरा वैसा टीका , इस लाइन में आगे वही बढ़ पाता है जो हिम्मत में बब्बरसिंह होता है , हमाम में सभी नंगे होते हैं , मर्दों के कर्ज मसान में चुकाये जाते हैं , वक्त पड़े बांका तो गधे को कहो काका आदि-आदि ।[93]

~~मुंबई~~ /ल/ मुंबई की झोंपड़पट्टी की वेश्याओं की भाषा :

मुंबई की झोंपड़पट्टी की जो वेश्याएं हैं उनकी भाषा के कई उदाहरण इसी अध्याय में "परिवेश" की चर्चा करते हुए दिए गए हैं , अतः उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए , सीधे उस भाषा की कतिपय विशेषताओं को यहां लक्षित किया जा रहा है :--

/1/ यह भाषा अधिकांशतः जगदम्बाप्रसाद दीक्षित के उपन्यास

"मुरदाघर" में प्रयुक्त हुई है । अतः उसी उपन्यास के कतिपय उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है । उपन्यास में वेश्याओं की जो भाषा है वह मुख्यतः बम्बइया हिन्दी की है । यहाँ बम्बइया हिन्दी के कतिपय प्रयोग द्रष्टव्य हैं — धंदा § धंधा §, नईं §नहीं §, वास्ते § लिए§, गिलास §ग्लास §, नौटांक § शराब का नाप §, मेरे कू § मुझे §, पन§ लेकिन §, कायकू § क्यों §, अउलाद § औलाद §, नईं होंगा § नहीं होगा §, डिरेवर § ड्रायवर §, इसकू § इसे §, झूटी § झूठी §, भौत § बहुत §, छोकरा § लड़का -पुत्र §, थोबड़ा § मुंह §, दारू § देशी शराब §, सादी § शादी §, बनाया § की §, इधरिच § इधर ही §, अपुन § मैं§, सुबू §सुबह §, रौंड § राउण्ड §, घराक § ग्राहक §, लुगड़ा §कपड़ा§, बिलाउज § ब्लाउज §, सनीमा § सिनेमा §, ×मड "सड़ेला-पड़ेला § सड़ाहुआ - पड़ा हुआ §, कब्बी § कभी§, वो टैम §उस टाइम §, मजूरी § मजदूरी §, खोली § टीन और घास-फूस की कच्ची कोठरी §, पीछू § पीछे §, सच्ची § सच §, गेंड़ी §देश §, पइसा § पैसा §, बुद्दु § बुद्धू §, गोस §गोश्त §, सोएंगा §सोएगा §, ठोकेंगा § ठोकेगा §, रंडी लोक § रंडी लोग§ आदि-आदि[94] इसी प्रकार के शब्द और प्रयोग समूचे उपन्यास में हैं ।

/2/ जिस प्रकार "सलाम आखिरी" में बंगला भाषा के शब्द और वाक्य मिलते हैं, उसी प्रकार यहां मराठी के कई शब्द और वाक्य मिलते हैं । यथा — हिच्या आईला § इसकी माँ की §, न्यां साहेबां समोर § ले जाओ साहब के सामने §, दरिया §सागर§, धाड़ § छापा§, घेरे हिला § पकड़ इसको §, टाक गाड़ी मधे §डाल गाड़ी में §, माझ्या अंगावर आली § मेरे ऊपर आई §, तुझे § तेरी §, तिला कशाला आणलय § उसको क्यों लाया §, महरोग आहे ... दिसत नाहीं § कोढ़ है इसको ... दिखता नहीं §, सोडा तिला § छोड़ो उसको §, बाकीनां टांका लारी मधे § बाकी सबको डालो लोरी में §, लवकर § जल्दी §, जाऊ

दे ना § जाने दे ना § , उगीच कशाला § बेकार क्यों § , बरं-बरं §अच्छा-अच्छा§ , करतो कांही बंदोबस्त § करता हूं कुछ बंदोबस्त § , पाठवितो तिला § भेजता हूं उसको § , मोटा §बड़ा § , विहीर कुआं§ , आधा कलाक § आधा घण्टा § आदि-आदि । [95]

/3/ बम्बइया-हिन्दी में मराठी की भांति गुजराती शब्द भी धड़ल्ले से चलते हैं । अतः इन वेश्याओं की बोली में गुजराती शब्द भी बहुतायत से मिलते हैं । यथा — नौटांक , पन §पण§ , गिलास , फूक्कट §फोकट § , दरिया §समुद्र § , मजूरी , बोम मारना §बूम मारवी § , गांडू , धाड़ , तड़ीपार §नगर-निकाला§ , मिस्त्री § बढ़ई - बढ़ई के लिए मिस्त्री शब्द कुमाऊं , बंगला , पंजाबी आदि भाषाओं में भी मिलते हैं । § , भरती § समुद्र-ज्वार § , गामडा § गांव § , कांदा §प्याज — यह शब्द मराठी में भी चलता है § , मोटा § बड़ा § , नजीक § नजदीक § , लेंगा § लहंगा — किन्तु ध्यान रहे गुजराती में इसका प्रयोग पाजामा के लिए होता है § , गोनी § बोरी - गोनी शब्द गुजराती शब्द गुर्णी का अपभ्रष्ट शब्द है § , दानचोरी § तस्करी§ , मालम § मालूम § , लोखण्ड § लोहा § , कलाक § घण्टा § आदि-आदि । [96]

/4/ मुंबई की वेश्याओं में अधिकांश तो मुसलमानी होती हैं , और कई जो दूसरे प्रदेशों या पहाड़ों से भगाकर लायी गयी हैं , वे अपने हिन्दू नाम बदलकर मुसलमानी नाम रख लेती हैं । "बोरीवली से बोरीबन्दर तक " की नूर वस्तुतः नैनिताल की रेवा है । बहरहाल इन मुसलमानी वेश्याओं के कारण इनकी भाषा में बम्बइया भाषा के साथ-साथ उर्दू के भी कई शब्द मिलते हैं । यथा — अल्ला , जिस्म , औलाद , आपा , साला , हराम-जादी , नामालूम , कुरबान , बिरियानी , गोस §गोश्त § , फटी लूंगी , निका , मालदार , मोब्बत , गुन्हा , नफ़रत ,

जिंदगानी , रोशनदान , जर्दा , अल्ला कू प्यारा होना , काफ़िला , तलक आदि-आदि ।[97]

/5/ वेश्याओं की भाषा में गालियों का होना स्वाभाविक है । "सलाम आखिरी" की भाषा में दो-एक अपवादों को छोड़कर सीधी-सादी गालियां है , जैसे हरामी , छिनाल , चोट्टी , मादर खसम , कुतिया , साली , लुच्ची आदि-आदि । किन्तु "मुरदाघर" में वेश्याओं की जो भाषा है उसकी गालियां कुछ ज्यादा खुली , गन्दी और अश्लिल हैं । यथा — छिनाल , रंडी , मुरदा निकले , साली कुत्ती , हरामजादी , मादरचोद , डुक्कर की औलाद , घुसेड़ अपना लण्ड मां की ... , भैनचोद , मां की चूत , गधी की गांड में घुस जाना , भड़वा , गांडू , ठोकेगा , साला हिजड़ा , तुझ्या आईला , मां की भोस , करवा लिया आदि-आदि ।[98] ऐसी गाली-गलौज वाली भाषा पूरे उपन्यास में है ।

§ब§ वेश्या-समाज के कुछ पारिभाषिक शब्द :
================================

लालबत्ती विस्तार या झोंपड़पट्टी की जो वेश्याएं हैं , उनके समाज और जीवन से सम्बद्ध कुछ शब्द हैं , जिनकी चर्चा हम यहां कर रहे हैं —

/1/ बैठना : वैसे "बैठना" शब्द का जो सामान्य अर्थ है , वह अर्थ यहां नहीं है । वेश्याएं ग्राहकों से जब अपना "रेट" तय करती हैं , तब स्पष्ट कर लेती हैं कि वह कितनी बार बैठेगा — एक बार या दो बार । अर्थात् वह कितनी बार संभोग करेगा ।[99]

/2/ शोर्ट-रेट : केवल एक बार "बैठने" का या कुछ मिनट के लिए बैठने का जो "रेट" तय होता है , उसे शोर्ट-रेट कहते हैं । उसमें वेश्या क्या-क्या करेगी , कपड़े उतारेगी या नहीं उतारेगी यह भी तय होता है ।[100]

/3/ लाँग-रेट : एक से अधिक बार बैठने के लिए या दिन या घण्टे के हिसाब से जो "रेट" तय होता है उसे "लाँग-रेट" कहते हैं। "शोर्ट-रेट" वाले अपना काम पताकर फटाफट चलते बनते हैं। लाँग-रेट वाले ग्राहक कुछ अधिक पैसे वाले और रसिक किस्म के जीव होते हैं। वे कई बार अपने साथ शराब भी लाते हैं या उसी समय आर्डर देकर मंगवाते हैं। वेश्या भी यदि शौकीन हुई तो उसे भी पिलाते हैं। वे जरा छककर भोग करने में मानते हैं। [101]

/4/ मंगलाचरण : "लाँग-रेट" वाले ग्राहक सम्भोग से पूर्व जो भूमिका बाँधते हैं, उसे व्यंग्यात्मक भाषा में "मंगलाचरण" कहते हैं। [102]

/5/ टेक आफ करना : तय की गई संख्या के अनुसार वेश्या के साथ संभोग के लिए तैयार होना। [103]

/6/ अधिया-सिस्टम : इसमें वेश्या अपनी कमाई का पचास प्रतिशत चकले की मालकिन को देती है। ग्राहकों को जुटाने की जिम्मेदारी तब चकले की मालकिन की हो जाती है। [104]

/7/ नथ उतारना : जब पहली बार किसी औरत या लड़की को वेश्या बनाया जाता है, तब उसे "नथ उतारना" कहते हैं। मध्यकाल में तवायफें केवल जिस्मफरोशी नहीं करती थी। तब नाच-गाना भी चलता था। उन दिनों में "नथ उतारने " का यह समारोह बड़ी धूमधाम से होता था। उसके लिए हजारों रूपये लिए जाते थे। किन्तु अब यह शब्द केवल मुहावरा बन गया है। जब किसी नयी छोकरी को पहली बार किसी पुरुष के सामने पेश किया जाता है, तब उसे "नथ उतारना " कहते हैं। उस लड़की का "रेट" काफी ऊंचा होता है। [105]

/8/ छुकरी : वेश्यावृत्ति के निमित्त लाई गई नाबालिग लड़की को "चकले" की भाषा में "छुकरी" कहा जाता है। उसका "रेट" बहुत हाई होता है। [106]

/9/ कुटनी : चकले की मालकिन को कुटनी कहते हैं। वेश्याएं उसे "मैडम" या " मौसी " भी कहती हैं। [107]

/10/ लाइनवालियाँ : वेश्या को सीधे अपमानित कर वेश्या न कहकर "लाइनवाली" कहा जाता है । अर्थात् इस लाइन में काम करने वाली । ग्राहकों के लिए खड़ी रहने वाली तथा किसी धक्के में किसी मालकिन के अधीन काम करने वाली वेश्या को लाइनवाली कहा जाता है । 108

/11/ फ्लाइंग वेश्या : जो वेश्याएं नगर या महानगर के आसपास के गाँवों या कस्बों से आती हैं और दिन-भर "धंधा" करके शामको अपने-अपने गाँवों या कस्बों में लौट जाती हैं । लालबत्ती विस्तार की किसी कुटनी से इनका संपर्क रहता है जिसे वे दिन-भर का किराया देती हैं । 109 ऐसी वेश्याओं को हम प्रकट-अप्रकट दोनों वर्गों में रख सकते हैं । अपने गाँव या कस्बे में, घर-परिवार में वे बताती हैं कि वे शहर में कहीं काम या नौकरी कर रही हैं । "सलाम आखिरी" की गायत्री इसी प्रकार की वेश्या है । लाल-बत्ती विस्तार के लिए वह प्रकट-वेश्या है, अपने गाँव-खेड़े के लिए अप्रकट ।

/12/ बाँधा गोभी : वेश्याओं की भाषा में "बाँधा गोभी" उस ग्राहक को कहा जाता है, जो किसी एक वेश्या के पास ही बारबार जाता है । उसे उस वेश्या से एक प्रकार का भावनात्मक लगाव हो जाता है । ~~*89*~~ 110

/13/ बाबू : वैसे सामान्य भाषा में "बाबू" का अर्थ दफ्तर में काम करने वाला व्यक्ति ऐसा होता है । बहुत से परिवारों में घर के मुखिया या पिता को "बाबू" कहा जाता है । किन्तु वेश्या-समाज में या लालबत्ती विस्तारों में "बाबू" शब्द का एक विशिष्ट अर्थ होता है । वेश्याओं के पति या प्रेमी को "बाबू" कहा जाता है । कई लोगों को शहर में रहने के लिए कोई जगह नहीं होती है । "होटल" में रहना उनकी हैसियत के बाहर का होता है तो ऐसे लोग कई बार किसी कोठेवाली को पकड़ लेते हैं । वेश्याओं के पास उनको रहने का ठौर और पत्नी की-सी

देखभाल मिल जाती है । इसके एवज में घरखर्च में भी उसका कुछ योग-दान रहता है । साथ रहते-रहते इनमें पति-पत्नी के भाव आ जाते हैं और वेश्याएं उनके नाम का सिन्दूर भी अपनी मांग में सजाती हैं । "बाबू" के साथ रहने वाली वेश्याएं प्रायः रात में ग्राहक नहीं लेतीं और इस प्रकार गृहस्थी और वेश्यावृत्ति साथ-साथ निभते हैं ।[11]

/14/ कमरेवाली : कमरेवाली वेश्या उसको कहते हैं जिसके पास अपना खुद का कमरा होता है । ऐसी वेश्याएं वे होती हैं जिनकी वेश्यावृत्ति प्रायः विरासत में मिली होती है । यहां "विरासत" मां से चलती है । वेश्या मां कम-से-कम अपनी बेटी को विरासत में एक कमरे की मल्कियत दे जाती है । इसके कारण वह बंधुआगिरी और अधिया सिस्टम दोनों से बच जाती है । और अपनी इस 15-20 साल की "करियर" {9} में अच्छा-खासा कमा लेती है ।[12]

/15/ बंधुआगीरी : कोई भी लड़की अपनी मरजी से इस व्यवसाय में आती नहीं है । वह किसी-न-किसी प्रकार की वंचना का शिकार होकर किसी मासी के पास पहुंचती है । मासी एक अच्छी-खासी रकम उस व्यक्ति को चुकाती है जो उसे चकले में बेच गया है । अतः प्रारंभ में तो उसकी कमाई का पूरा हिस्सा चकले की मालकिन का होता है । इस संदर्भ में लुइज़ ब्राउन का सर्वेक्षण कहता है :: " कोलकाता में चुकरी प्रथा के तहत एक लड़की आम तौर पर बंधुआगीरी से मुक्त होने तक अपनी कर्ज राशि का दोगुना अदा कर चुकी होती है । उसके बाद वह अधिया-प्रथा के तहत चली जाती है जिसके अनुसार वह वेश्यालय की मौसी को अपनी कमाई का आधा देती है ।"[13]

/16/ चुकरी-प्रथा : इस प्रथा के तहत मौसी वेश्या की कमाई का पूरा हिस्सा ले लेती है जब तक उसके कर्ज से दुगुनी रकम वह वसूल नहीं कर लेती । तब तक वह वेश्या मौसी के यहां

"बंधक" के रूप में रहती है । [114]

/17/ नाबालिक लड़की को बाल-वेश्या बनाने की प्रक्रिया : यह तो एक सर्व-सम्मत तथ्य है कि वेश्यालय में जाने वाला प्रत्येक पुरुष नाबालिक कम उम्र की लड़की को पसंद करते हैं । इसके दो कारण है — एक मनोवैज्ञानिक कारण है, इससे उनके पुरुषत्व का पोषण होता है, उनका अहं पोषित होता है; दूसरा कारण वैज्ञानिक है, कमसीन लड़कियों से गुप्त-रोग का खतरा कम रहता है । एक तीसरा कारण भी है । ऐसी एक मान्यता प्रचलित है कि कमसीन लड़की से संभोग करने से ज्वानी की उम्र बढ़ती है और बड़ी उम्र की औरत से संभोग करने पर आदमी जल्दी बुढ़िया जाता है । फलतः सेक्स के बाजार में ऐसी लड़कियों की मांग सबसे ज्यादा होती है । उनका "रेट" भी ज्यादा होता है । ऐसे में यह बिलकुल स्वाभाविक है कि उसके जनन-अवयव का उतना विकास न हुआ हो ﴾ नहि बिकास एहि काल ।) — बिहारी ﴿, अतः उसके जनन-अवयवों को विकसित करने के लिए मौसियां ऐसी लड़कियों के ~~xxx~~ जनन-अंग में "शोला" घुसा दिया जाता है । बंगला भाषा में "शोला" कागज के बने पदार्थ को कहते हैं जो पानी पड़ने से गल जाता है । फिर उस लड़की को पानी के टब में बिठा दिया जाता है । जैसे-जैसे "शोला" पानी में फूलता जाता है, वैसे-वैसे गुप्तांग में भी फैलाव आता जाता है । इस प्रकार करीब पांच-छः महीने में लड़की पूरी तरह से तैयार हो जाती है । [115]

/18/ विषकन्या : प्राचीन समय में एक विशेष प्रकार की वारांगना को तैयार किया जाता था । किसी स्वरूपवान लड़की को शैशव-काल से ही एक विशेष किस्म का विष थोड़ी-थोड़ी मात्रा में दिया जाता है । उसकेकारण जब वह युवा होती है तब उसका रूप बड़ा मारक-मोहक-मादक हो जाता है । उसके प्रेम-~~xxx~~ पाश में फंसकर जो भी युवक उसे चुंबन देता है वह मृत्यु के शरण हो

हो जाता है । प्राचीन काल में अपने राजनीतिक विरोधियों को समाप्त करने के लिए विषकन्याओं का प्रयोग किया जाता था । चाणक्य के कहने पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मदनिका नामक विषकन्या का प्रयोग पर्वतक को समाप्त करने के लिए किया था ।[116]

/19/ की-सिस्टम : यह एक ऊंचे तबके की वेश्यागिरी है । इसमें हाई-सोसायटी के लोग एक क्लब में इकट्ठा होते हैं और अपनी-अपनी गाड़ियों की चाबी रख देते हैं । अंधेरे में सबकी चाबी आपस में बदल जाती है और जिसके पास जो चाबी आती है, उसकी बीबी को लेकर वह एक अलग कमरे में चला जाता है ।[117]

/20/ अग्नि-कन्या : जिस वेश्या को "एड्स" हो गया हो, या जो एच.आई.वी. पोजिटिव हो उसे xxx× अग्नि-कन्या कहा जा सकता है, क्योंकि उसके साथ "सेक्स" मानना आग की लपटों से खेलने के समान होता है ।[118]

/21/ सिझाई : इसे एक प्रकार से वेश्या की "ट्रेनिंग" कह सकते हैं । प्रायः लड़कियां इस व्यवसाय में जबरजस्ती धकेली गई होती हैं । "औसत औरत को इच्छुक वेश्या में तब्दील करने के लिए उसे काफी सिखाने-पढ़ाने की जरूरत होती है । इसे xxxxx" xxxxx" "सिझाना" कहते हैं । यह ऐसा ही है जैसे खाने के लिए मांस को सिझाया जाता है । "सीझने" के बाद अनिच्छुक वेश्या अपने धंधे को कबूल कर लेती है ।"[119] तब "मौसिया" उसे अपने धंधे के गुर भी सिखाती है कि कैसे ग्राहकों को बेवकूफ और उल्लू बनाया जा सकता है, कैसे उनके पुरुषत्व को हवा दी जा सकती है और कैसे "फिक्स्ड" ग्राहक बनाये जा सकते हैं कैसे ठेंह-ठेंह किया जाता है और सिसकारियां भरनी होती हैं आदि-आदि ।[120]

/22/ गुदा-मैथुन : वेश्याओं के यहां आनेवाले कई ग्राहक सामान्य-मैथुन या नैसर्गिक मैथुन के स्थान पर गुदा-मैथुन की भी

मांग करते हैं । वेश्या जब "चुकरी-प्रथा" के तहत होती है, तब लालची मौसियों के रहते उन्हें यह त्रास भी बरदाश्त करना ~~पड़ता~~ पड़ता है, या बाद में "अधिया सिस्टम" में जब ग्राहकों की कमी पड़ जाती है तब विवशतावश उसे यह कबूल करना पड़ता है । कई लॉंग रेट के ग्राहक नैसर्गिक मैथुन के उपरान्त दूसरे राउण्ड में गुदा-मैथुन की मांग करते हैं या पहले से ही रेट तय करते समय यह सब बातें कर ली जाती हैं । अंग्रेजी में इसे "सोडोमी" कहते हैं । [21]

/23/ मुख-मैथुन ﴾ कोइटस इन माउथ ﴿ : कई ग्राहक नैसर्गिक मैथुन के साथ-साथ "मुख-मैथुन" भी चाहते हैं । वैसे सामान्यतः "मुख-मैथुन" वाचिक मैथुन को कहते हैं, किन्तु "सेक्स" के संदर्भ में "मुख-मैथुन" स्त्री के मुंह में शिश्न डालकर मैथुन-कर्म करने को कहते हैं । प्रथम वाला लाक्षणिक अर्थ है, दूसरावाला शाब्दिक । कई पुरुषों को इससे अधिक उत्तेजना प्राप्त होती है । यह भी दो प्रकार का होता है -- xxxx /1/ उसमें स्त्री पुरुष के लिंग को अपनी जिह्वा से स्पर्श करती है, इसे अंग्रेजी में "फैलेशियो" कहा जाता है । [22] /2/ दूसरे प्रकार में पुरुष स्त्री की योनि में स्थित "मदनांकुर" ﴾ क्लिटोरिस ﴿ को अपनी जिह्वा से सहलाता और चाटता है । इससे स्त्री की उत्तेजना अनेकगुना बढ़ जाती है । इसे अंग्रेजी में "कनिलिंगस" कहा जाता है । [23]

/24/ बोण्डेज : जो पुरुष स्वभावतः "सैडिस्ट" होते हैं उनको स्त्री से सेक्स मानते समय अधिक-से-अधिक-से-अधिक पीड़ा देने में एक विशेष किस्म की आनंदानुभूति होती है । वे कामांध होकर मानो स्त्री पर टूट पड़ते हैं और उसे जगह-जगह काट लेते हैं । [24]

/25/ बहनजी : सामान्य भाषा में इसका अर्थ भी भगिनी या सिस्टर होता है । लाक्षणिक भाषा में कई बार उस स्त्री को "बहनजी" कहा जाता है जो ज्यादा फैशनेबुल कपड़े नहीं पहनती है और परंपरागत परिधान ﴾ ट्रेडिशनल ड्रेस ﴿ में मानती है । किन्तु

मुंबई की फिल्म-नगरी में "बहनजी" शब्द का एक खास मतलब निकलता है और वह है "रखैल" । [125]

/26/ स्पेर-व्हिल : आमतौर पर "स्पेर-व्हिल" का अर्थ होता है दुपहिया या कार के साथ ~~xxxxxxxxxxxx~~ का अतिरिक्त व्हिल । कार या स्कूटर में पंक्चर होने पर "स्पेर-व्हिल" को बदलकर काम चलाया जाता है । परन्तु एक विशिष्ट राजनीतिक तबके में "स्पेर-व्हिल" का अर्थ उपपत्नी या रखैल होता है । [126]

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन शब्दों का प्रयोग एक विशेष तबके में ~~xxxx~~ होता है और आम अर्थ से अलग उसका दूसरा अर्थ ग्रहण किया जाता है ।

निष्कर्ष :
=======

अध्याय के समग्रावलोकन के उपरान्त हम निम्नलिखित निष्कर्ष तक सहजतया पहुँच सकते हैं —

§1§ इस अध्याय को तीन शीर्षकों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ वेश्या-समाज , /2/ वेश्या-परिवेश और /3/ वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त भाषा ।

§2§ वेश्या-समाज के अन्तर्गत तमाम कोटियों की वेश्याएं ~~xxxx~~ , वेश्याओं से जुड़े हुए लोग तथा वेश्याओं के बाल-बच्चे आदि का समावेश किया जा सकता है ।

§3§ मोटे तौर पर वेश्याओं के तीन स्तर मिलते हैं — ~~xx~~ /1/ हाई-फाई सोसायटी की हाई-फाई वेश्याएं जिनमें अंग्रेजी पढ़ी-लिखी सुशिक्षित कालगर्ल , ऊंची सोसायटी की होटेल-विमेन , मोडेल्स तथा फिल्म-तारिकाओं का समावेश होता है । इसका अर्थ यह कतई नहीं कि सभी मोडेल्स या फिल्म-अभिनेत्रियां इस व्यवसाय

में होती हैं, किन्तु कई बार इस लाइन में टिके रहने के लिए या कम समय में ज्यादा पैसा बनाने के लिए कुछ लड़कियाँ इन "शोर्ट-कट" का सहारा लेती हैं। /2/ मध्यस्तरीय वेश्याएं जिनके चार्ज सौ-दो सौ रूपयों से लेकर एक-दो हजार तक के रहते हैं। और /3/ एकदम निम्न-स्तरीय वेश्याएं जो रोज धंधा करती हैं और रोज खाती हैं।

§4§ वेश्या-समाज से जुड़े हुए लोग वस्तुतः इस व्यवसाय को चलाते हैं। इनको हम इस व्यवसाय के हाथ-पैर कह सकते हैं। वेश्याओं के दलाल, भड़वे, बिचौटिये आदि इसमें आते हैं। त्रि-तारक या पंचतारक होटलों के मैनेजर से लेकर लालबत्ती विस्तारों के भड़वे तक इसमें सम्मिलित हैं। कुछ लोग प्रकटतः मंदिर के पुजारी, विधवाश्रम के संचालक, महिला-आश्रमों के संचालक, समाजसेवी या किसी राजनीतिक पार्टी के कर्ता-धर्ता होते हैं परंतु अप्रकट रूप से वे भड़वागिरी या दल्लागिरी का काम करते हैं। वेश्या-समाज में वेश्याओं के बाल-बच्चें, या कभी-कभार उनके पति या प्रेमी जिनको "बाबू" कहा जाता है वे भी सम्मिलित हैं।

हम ~~पांच~~ -चार

§5§ वेश्या-परिवेश को ~~हम×तीन~~ शीर्षकों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ स्थानगत परिवेश, /2/ कालगत परिवेश, /3/ हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं का परिवेश, /4/ मध्यवर्गीय और निम्न-वर्गीय वेश्याओं का परिवेश| ~~और /5/ धार्मिक×क्षेत्र×की× क्षेत्र की वेश्याओं का परिवेश।~~

§7§ स्थानगत परिवेश में दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, आग्रा, जैसे महानगरों तथा अन्य छोटे-बड़े नगरों के वेश्यालयों के परिवेश को लिया गया है। हिन्दी के कुछेक उपन्यासों में हमें न्यूयोर्क, लण्डन आदि शहरों की वेश्याओं का परिवेश भी उपलब्ध होता है।

§8§ कालगत परिवेश में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल की वेश्याओं की स्थिति के संदर्भ में अध्ययन किया गया है।

§9§ हाई-फाई प्रकार की वेश्याओं का परिवेश हमें कुकमकली" , "नदी फिर बह चली" , " नदी नहीं मुड़ती" , "छाया मत छूना मन" , "डाकबंगला" , " मछली मरी हुई " , "नावें" , "पतझड़ की आवाजें " , चिड़ियाघर" , " ढहती दीवारें " , "चम्पाकली" , "डिज हाईनेस " आदि उपन्यासों में उपलब्ध हो जाता है ।

§10§ मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय वेश्याओं का परिवेश "नदी फिर बह चली" , " आगामी अतीत" , , "बोरीवली से बोरीबन्दर तक " , "कबूतरखाना" , "सलाम आखिरी" , " अंधेरी गली का मकान " "चढ़ती धूप " , " अवसान आदि उपन्यासों में प्राप्त होता है । उनका यह परिवेश निहायत गन्दा , घिनौना और बीभत्स होता है । लालबत्ती विस्तार की वेश्याएं दड़बेनुमा कमरों में रहती हैं , जहां किसी प्रकार की सुविधा नहीं होती है । मुंबई में तो फुटपाथों तथा पाइपों में भी वेश्याओं का संसार चलता है ।

§11§ वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त भाषा को हम मुख्यतया चार संवर्गों में रख सकते हैं -- /1/ सामान्य भाषा या लेखकीय भाषा , /2/ सोनागाछी की वेश्याओं की भाषा , /3/ मुंबई की झोंपड़पट्टी की वेश्याओं की भाषा तथा /4/ वेश्या-समाज में प्रयुक्त कुछ विशिष्ट शब्द ।

§12§ कुछेक अपवादों को छोड़कर जिनमें वेश्या-जीवन का चित्रण उपलब्ध होता है , ऐसे उपन्यासों में वेश्याओं ने भी सामान्य या लेखकीय भाषा का प्रयोग किया है । लेखकों ने प्रायः इस बात का ध्यान रखा है कि मुसलमानी वेश्याओं की भाषा में उर्दू शब्द बहुतायत से मिलते हैं तो हिन्दू वेश्याओं की भाषा प्रायः लेखकीय-सी रही है । प्रेमचन्दपूर्व काल तथा प्रेमचंदकाल के लेखकों में

वेश्याओं द्वारा प्रयुक्त भाषा में भी ज्यादा वजनी गालियाँ नहीं मिलती हैं। बहुत हुआ तो हरामी, वेश्या, ~~xxxx~~ छिनाल जैसी गालियां मिलती हैं।

§13§ सोनागाछी की वेश्याओं की भाषा प्रायः बंगाली है। अतः "सलाम आखिरी" की लेखिका ने उसका निम्न हिन्दी में रूपान्तर किया है। परन्तु उसे बंगला भाषा का संस्कार कहिए या कुछ भी उसका स्तर बहुत नीचे नहीं गया है। एक-दो स्थानों पर कुछ वजनी गालियाँ मिलती हैं।

§14§ मुंबई की झोंपड़पट्टी की वेश्याओं की भाषा मुख्यतः हमें "गुरदाघर" में उपलब्ध होती है। यह भाषा "बम्बइया-भाषा" या जिसे आजकल "टपोरी-लैंग्वेज" कहा जाता है, उस प्रकार की है। उसमें हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, गुजराती, पंजाबी, मद्रासी आदि भाषाओं के शब्द और "टोन्स" मिलते हैं। यहाँ गाली-गलोच में किसी प्रकार का परहेज नहीं बरता गया है।

§15§ वेश्या-समाज की भाषा में कुछ शब्द ऐसे मिलते हैं जिनका शाब्दिक अर्थ न लेकर उस विशेष तबके में जो अर्थ लिया जाता है वह अर्थ अभिप्रेत होता है। ऐसे शब्दों में बैठना, शोर्ट-रेट, लॉंग-रेट, मंगलाचरण, अधिया सिस्टम, नथ उतारना, छुकरी, लाइन-वालियां, फ्लाइंग-वेश्या, बांधा गोभी, बाबू, कमरेवाली, बंधुआ-गीरी, छुकरी-प्रथा, विषकन्या, अग्नि-कन्या, सिझाई, बहनजी, स्पैर-व्हिल आदि मुख्य हैं।

====== XXXXXX ========

: सन्दर्भानुक्रम :

§1§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : डा. एम.एल. गुप्ता : पृ. 258 ।

§2§ द्रष्टव्य : वही : पृ. 258-259 ।

§3§ द्रष्टव्य : सेवासदन : प्रेमचंद : पृ. 24 ।

§4§ द्रष्टव्य : भारतीय सामाजिक समस्याएं : पृ. 270 ।

§5§ द्रष्टव्य : कामसूत्रम् : श्रीयशोधर विरचित जयमंगला टीका के साथ : हिन्दी व्याख्याकार : श्री देवदत्त शास्त्री : पृ. 697 ।

§6§ द्रष्टव्य : भारतीय सामाजिक समस्याएं : पृ. 270 ।

§7§ "हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास " : डा. पारूकान्त देसाई : पृ. 266 ।

§8§ टाइम्स आफ इण्डिया : 29-7-07 : पृ. 7 ।

§9§ द्रष्टव्य : नदी फिर बह चली : हिमांशु श्रीवास्तव : पृ. 304-305 ।

§10§ द्रष्टव्य : सलाम आखिरी : मधु कांकरिया : पृ. 113 ।

§11§ से §13§ : वही : पृ. क्रमशः 111, 75, 66 ।

§14§ जनानी सवारियां : ऋषभचरण जैन : पृ. 73 ।

§15§ और §16§ : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 40, 89-91, 93 ।

§17§ जनानी सवारियां : पृ. 89 ।

§18§ से §26§ : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 152, 99, 99, 100, 21, 111, 126, 125-126, 120, ।

§27§ " हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास : पृ. 250 ।

§28§ वही : पृ. 236-237 ।

§29§ चिड़ियाघर : गिरिराज किशोर : पृ. 52 ।

§30§ ढहती दीवारें : मीना दास : पृ. 100 ।

§31§ द्रष्टव्य : " यौन-दासियां : एशिया का सेक्स बाज़ार : लुइज़ ब्राउन : पृ. 93 ।

§32§ से §37§ : वही : पृ. क्रमशः 93, 91-92, 95, 95, 95 , 175 ।

§38§ सलाम आखिरी : मधु कांकरिया : पृ. 93 ।

§39§ मुरदाघर : जगदम्बाप्रसाद दीक्षित : पृ. 8-9 ।

§40§ से §55§ : वही : पृ. क्रमशः 11, 16, 13, 17, 24, 28-29, 28, 53, 53, 53, 54-55, 58-59, 82-83 , 108, 129, 139 ।

§56§ "हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास " : डा. पारुकान्त देसाई : पृ. 270-271 ।

§57§ सलाम आखिरी : पृ. 13 ।

§58§ त्यागपत्र : जैनेन्द्रकुमार : पृ. 80-81 ।

§59§ से §69§ : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 14, 14, 16-17, 16, 73, 73-74, 74-75, 75, 88×8×××× 87-88 , 101-102, 105 ।

§70§ द्रष्टव्य : आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास : डा. पारुकान्त देसाई : पृ. 109 ।

§71§ सलाम आखिरी : पृ. 99 ।

§72§ द्रष्टव्य : गुजरात समाचार § गुजराती दैनिक § दिनांक - 13-8-07 पृ. 8 ।

§73§ स्वर्गीय कुसुम : किशोरीलाल गोस्वामी : पृ. 137 ।

§74§ तीन वर्ष : कु× भगवतीचरण वर्मा : पृ. 262 ।

§75§ माँ : विश्वम्भरनाथ शर्मा "कौशिक" : पृ. 130 ।

§76§ वही : पृ. 131 ।

§77§ घरौंदे : डा. रांगेय राघव : पृ. 293 ।

§78§ प्रेत और छाया : इलाचन्द्र जोशी : पृ. 303 ।

§79§ सलाम×आखिरी××× से §92§ : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 8, 22, 22-23, 23, 23, 23, 24, 25-26, 40, 67-68, 68, 71, 70, 107-108 ।

§93§ वही : पृ. क्रमशः 22, 37, 68, 75, 79, 100, 103, 113, 152, 163, 162 ।

§94§ मुरदाघर : पृ. क्रमशः 9, 9, 9, 9, 9, 9, 9, 9, 9, 10, 10, 10, 10, 10,

10, 10, 10, 10, 10, 12, 12, 14, 16, 16, 16, 16, 16, 16, 16, 16, 17, 17, 17, 17, 21, 21, 21, 23, 25, 26, 29, 29, 32 ।

§95§ वही : पृ. क्रमशः 8, 8, 14, 30, 30, 30, 31, 31, 31, 31, 31, 31, 31, 74, 74, 74, 74, 74, 93, 122, 142 ।

§96§ वही : पृ. क्रमशः 88 9, 9, 9, 13, 14, 17, 20, 25, 30, 37, 39, 42, 53, 70, 93, 105, 107, 108, 114, 132, 143, 142 ।

§97§ वही : पृ. क्रमशः 8, 8, 10, 10, 10, 11, 17, 24, 26, 43, 48, 58, 62, 64, 65, 81, 96, 97, 118, 124, 126 ।

§98§ वही : पृ. क्रमशः 8, 8, 9, 10, 11, 11, 14, 17, 12, 17, 16, 25, 25, 29, 29, 31, 31, 55 ।

§99§ द्रष्टव्य : नदी फिर बह चली : हिमांशु श्रीवास्तव : पृ. 278 ।

§100§ से §112§ : सलाम आखिरी : मधु कांकरिया : पृ. क्रमशः 15 तथा 70, 15-71, 17, 17, 21, 29, 29, 40, 58, 66, 74, 99, 101,

§113§ "यौन दासियां : एशिया का सेक्स बाज़ार" : लुइज़ ब्राउन : पृ. 198 ।

§114§ वही : पृ. 198 ।

§115§ से §118§ : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 113-114, 123-126, 128, 187, ।

§119§ "यौन दासियां ..... " : पृ. 91-92 ।

§120§ सलाम आखिरी : पृ. 22-23 ।

§121§ "यौन-दासियां ..... " : पृ. 198 ।

§122§ " हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक क्षण, ग्रन्थियों, समस्याओं एवं काम-कुण्ठाओं का चित्रण " : डा. मनीषा ठक्कर : पृ. 132 ।

§123§ और §124§ : वही : पृ. क्रमशः 132-133, 134-135 ।

§125§ दिल एक सादा कागज : डा. राही मासूम रज़ा : पृ. 63 ।

§126§ बर्फ गिर चुकने के बाद : शैलेश मटियानी : पृ. 57 ।

======= XXXXXXX ==========